✽ श्री जानकीवल्लभो विजयते ✽

नित्य लीला लीन परम रसिक श्री बाबूजी

पूज्यपाद श्री श्यामसुन्दर शरण जी

प्रणीत

अष्टयाम केलि

एवम्

झूलन होली

आदि पर्व

सम्पादक एवं प्रकाशक

बृजनाथ शरण अरोड़ा

रामजी द्वारा, हाथरस (उ० प्र०)

मंगलमय प्रभु श्री राम का अनुज सखाओं के साथ खेल

आज प्रभु ! केलि–कला अभिलास ।
लै लै हय, कन्दुक कर, ठाढ़े-पौरि; दरस की प्यास ।।१।।
सुनत संग लै अनुज, महल ते–आए, अधिक हुलास ।
लाइ लाइ हिअ, उमँगि सखन सों-भेटत प्रभु सुखरास ।।२।।
गति गयन्द गवने उपबन सब-सखा अनुज सँग दास ।
चढ़ि चढ़ि अश्व उछारैं, धावैं-कन्दुक केलि बिलास ।।३।।
कोउ इक गहत करनि, पुनि डारै–लेत एक अनयास ।
दै तारी कोउ लै सरपट हय–रचत मचत अति हास ।।४।।
चढ़ि चढ़ि सुर विमान नभ बरसत-सुरतरु सुमन सुबास ।
जय जय धुनि लोकनि मँहँ छाई–जग आनन्द निवास ।।५।।
उतरि उतरि हय ते पग बन्दहिं-सकल, हरन भव त्रास ।
देहिं दयालु भावतो, सबको–श्याम मिलन की आस।।६।।

श्री बाबूजी कृत
'पदावली' से

* श्री सीतारामोजयति *

अष्टयाम केलि

(श्री युगुल माधुरी विलास)

प्रणेता—

नित्य लीला लीन

पूज्यपाद श्री श्यामसुन्दरशरण जी

(श्री बाबूजी)

फर्रुखाबाद

प्रथमावृत्ति संवत् २०३७ विक्रमी

सम्पादक एवं प्रकाशक

बृजनाथशरण अरोड़ा

रामजी द्वारा, हाथरस (उ० प्र०)

न्यौछावर २)

परम पूज्य श्री बाबूजी कृत 'पदावली' से

श्री अवध वीथिन-बिहार

करतल सोहत बान धनुइआँ ।
अनुज सखन सँग मन्द मन्द गति,
बिहरत बीथिन महिआँ ॥१॥
अरस परस बोलनि, बतरावनि,
बिहँसनि कल लरकैआँ ।
अवध नगर नर नारि निरखि छवि,
पुनि-पुनि लेत बलैआँ ॥२॥
नख सिख साजि सुभग पटभूषण,
जग मग जोति जगैआँ ।
कोटि कोटि रवि शशि दामिनि दुति,
मन्द, मदन मद नैआँ ॥३॥
पगन सरोज लसत लघु लोनी,
मनि मय ललित पन्हैआँ ।
नभ विमान सुर सुमन सुबरसत,
जै जै धुनि जग छैआँ ॥४॥
आरत दीन हीन सब अंगन,
पतित श्याम निरखैआँ ।
हँसि हँसि हेरि हेरि हिअ लावत,
टेर टेर गहि बैआँ ॥५॥

श्रीरामभद्रायनम:

विनीत प्रार्थना

अखिल विश्व ब्रह्माण्ड नियन्ता मंगलमय प्रभु श्रीराम की लीला अति विचित्र है। वह लीला मय कब क्या करेंगे, कैसे करेंगे, इसे कौन जान सकता है? तथा किससे कब, क्या करायेंगे, कैसे करायेंगे यह जानना भी अति कठिन है। हाँ वह दयालु प्रभु दयाकर जनाना चाहें तब तो संभव एवं सुगम है। यथा—

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई।

तथा

तुम्हरिहि कृपा तुम्हहिं रघुनन्दन।
जानहिं भगत-भगत उर चन्दन॥

फिर जानने से विशेष प्रयोजन भी क्या? वह जो करें जो करायें उसको सहर्ष देखते रहने-करते रहने में ही कल्याण है।

ऐसी ही एक लीला नव नवलीलाधारी ने और रच दी वह यह कि मेरे परम दयालु श्री सद्गुरु देव श्री बाबूजी (श्री श्यामसुन्दर-शरण जी) निवासी फर्रुखाबाद स्वयं तो छिपकर रहते ही थे, अपनी रचनाओं को भी छिपाकर रखते थे। हुआ यह कि पहले तो प्रभु श्रीराम जी उनके इस भाव को सहते रहे, किन्तु उनके नित्य लीला लीन (साकेत वासी होने के पश्चात् लगभग २८ वर्ष बाद भक्तवत्सल प्रभु श्रीराम राघवेन्द्र ने जन कल्याणार्थ एवं स्वप्रपन्न भक्तों के आनन्द हेतु पूज्य पाद श्री बाबूजी को प्रकाश में लाना ही चाहा—उनकी भावमयी पावन रचनाओं के द्वारा। और माध्यम बनाया उन कौतुकी प्रभु ने मुझ मन्दमति दीन हीन मलीन को। तब मैं क्या करूँ? मैं इस योग्य तो हूँ नहीं कि इतने बड़े भगवदीय कार्य को कर सकूं। मैंने भी विचारा जिसने माध्यम बनाया है वही स्वयं जैसे चाहेंगे

वैसे करायेंगे। तुम तो इन प्रेमनिधि लीलाधर की लीला देखते चलो जो यह अपने अभिन्न श्री बाबू जी के संग कर रहे हैं। करने दो जैसे यह चाहें, अन्यथा करने की सामर्थ्य भी किसमें है ? जैसे यह नचायें प्रसन्नता पूर्वक वैसे ही नाचते रहो। फिर इसमें मेरा तो परम लाभ है, इसी मिस श्री भगवल्लीला चिन्तन का।

मंगलमय प्रभु श्री राम की ही प्रेरणा से प्रेरित हो परमरसिक श्री बाबू जी की रचनाओं का यह चतुर्थ प्रकाशन है। अर्थात् प्रथम में 'विनय माला' द्वितीय में 'संत मणि प्रकाशिका' तृतीय में 'विनय-बाटिका' का प्रकाशन होने के पश्चात् अब यह चतुर्थ प्रकाशन है "अष्टयाम केलि" (श्री युगुल माधुरी विलास) का। इसको रसिक वर श्री बाबू जी ने गुप्त ही नहीं अपितु अति गुप्त रक्खा। यह है भी सरस एवं शृंगार परक। वैसे तो इसमें दास्य, सख्य, वात्सल्य, मधुर और शान्त पाँचों भावों का दर्शन है पर प्रधानता मधुर भाव की ही है। यह भावुक भक्तों के लिए अधिक उपयोगी, आनन्ददायक, भाववर्द्धक, संग्राह्य एवं नित्य पठनीय है। इसमें भक्तों के परमाराध्य युगलनिधि भगवान श्री सीताराम जी की प्रातः जागरण से लेकर रात्रि शयन तक की आठों प्रहर की मनोरम भावपूर्ण मधुर मधुर सुहावनी लीलाओं (झाँकियों) का पावन रसीले काव्य में दिव्य चित्रण है। जिसमें भावमयी सखी परिकर का श्री युगल सरकार को समय समय पर सेवा की विविध साज सज्जा से प्रीति पूर्वक रिझाना तो अनूठा ही है। इस "अष्टयाम केलि" को परम रसिक श्री बाबूजी ने अपने भाव राज्य में खूब संजोया है—श्री युगल निधि के प्रेमरस में तल्लीन रहने को। यहाँ तक कि आप 'रस मोदलता' सखी के रूप में लीला में समाविष्ट हैं।

एक विचार आया कि विविध उत्सवों, विभिन्न पर्वों को श्रीराम-नवमी, श्री जानकी नवमी, श्रावणी तीज झूला, होली आदि की

रचनाएँ जो परम रसज्ञ श्री बाबूजी द्वारा रचित हैं वह भी इस 'अष्टयाम केलि' के साथ संकलित कर दी जायँ तो एक ही पुस्तक में होने से भगवत् प्रेमियों को सुविधा व अधिक सरसता हो जायगी। अतः इस प्रकार की अधिकांश रचनाएँ इस भावमयी पुस्तक में सम्मिलित कर दी गईं। जिससे प्रभु प्रेमियों के लिए इस पुस्तक की उपादेयता और अधिक हो गई है।

हाँ यह बात अवश्य है कि इसके चयन एवं सम्पादन में मुझ जैसे अल्पबुद्धि, भावरंक से त्रुटि होना स्वाभाविक ही है। जहाँ भी त्रुटि दीख पड़े वह मेरी ही समझ आप भगवद्भक्त महानुभाव सुधार कर हृदयंगम करने की कृपा करें और भगवद् रस में गोता लगा दिव्यानन्द से आनन्दित हों।

श्री भगवत्कृपा से आगामी प्रकाशन 'पदावली' का होने जा रहा है जिसमें भगवान श्रीराम की बाल लीलाओं से लेकर राज्याभिषेक पर्यन्त विशेष भक्ति भाव पूर्ण लीलाओं के मनोरम वर्णन के साथ श्री मिथिलापुर की सखी एवं सखाओं का बड़ा सुन्दर अनूठा प्रेम प्रदर्शित किया गया है। तथा कुछ भगवान श्री कृष्ण और भक्त प्रवर श्री सुदामा प्रसंग एवं कुछ महाप्रभु गौराङ्गदेव श्री कृष्ण चैतन्य सम्बन्धी सुहावनी रचनाएँ भी ललित काव्य में हैं।

'विनय बाटिका' पुस्तक प्राप्त होने पर कतिपय पत्र कृपालु विद्वान सज्जन भक्तों के शुभ सम्मति के आए तथा कतिपय सज्जनों ने मौखिक प्रशंसा की। सबको वहुत बहुत साधुवाद। उनको यहाँ प्रस्तुत तो करना नहीं है न मेरी ऐसी धारणा ही रही कि शुभ सम्मतियों से पुस्तक को बिभूषित किया जाय। अपने को गुप्त रखने वाले श्रीराम रसलीन श्री बाबूजी के भगवदीय साहित्य को शुभ सम्मतियों से सजाने का मेरा विचार नहीं वरन श्रीराम रस मर्मज्ञ श्री बाबूजी के पावन भगवद् भक्ति मय साहित्य प्रकाशन से प्रभु प्रेमियों को आनन्द मिले, भगवत्प्रीति में सहायता हो अर्थात् भक्त वत्सल प्रभु

श्रीराम के प्रिय भक्तों की सेवा करना है। इसी भाव से भारत के कुछ प्रमुख गण्यमान्य विद्वान, महापुरुषों, भावुक भक्तों, सन्तों को भी ये पुस्तकें गुप्त रीति से ही भेंट की गईं। क्योंकि मेरा लक्ष्य इन महानुभावों की सेवा करना था न कि इनसे मिलकर शुभ सम्मति लेना। पर एक भक्त ने 'विनय बाटिका' पाने पर अपने पत्र में ऐसे उद्गार प्रकट किए हैं कि जो वरवश अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जिसमें भक्ति विभूषित श्री बाबूजी के अदर्शन का पश्चाताप तथा चित्त में उनकी प्रीति रीति की छाप और अन्य रचनाओं के प्रकाशन की लालसा व्यक्त की है। इस पत्र ने इतना प्रभाव डाला है कि यहाँ प्रकाशित करने को वाध्य हो गया हूँ।

卐 श्री हरि 卐

पत्र

....

आपके कर कमलों से प्राप्त प्रातः स्मर्णीय पूज्यपाद साकेत धाम वासी श्री श्यामसुन्दर शरण जी (श्री बाबू जी) द्वारा विरचित 'विनय-बाटिका' प्राप्त कर अपूर्व सुख प्राप्त हुआ।

साहित्य व्यक्ति का दर्पण होता है। श्री बाबूजी स्वयं में जो थेवह तो महान थे ही, हम जैसे असंख्य लालसा वाले व्यक्ति उनके सान्निध्य तो क्या—दर्शनों तक से बंचित रहे, किन्तु उनके द्वारा लगाई गयी पौध जिनमें 'बृजुआ' भी हैं; से अनुमान लगाया जा सकता है कि वह महानतम सन्त कैसे रहे होंगे। जिनके जीवन का प्रतिविम्ब अनेकों विख्यात निधियों पर पड़ा। मैं हृदय से ऐसे सुसन्त महापुरुष के श्री चरण कमलों में नमन करता हूँ, जिन्होंने जीवन का उद्देश्य नाम के वजाय काम रक्खा।

भावात्मक रूप से कुछ लाइनें पद्य में अविवेक से लिख रहा हूँ, मैं अंकिचन–अमूल्य हीरे का मूल्य तो नहीं चुका सकूँगा।

आपका अपना—

रामगोपाल

'विनय-बाटिका' संग्रह कर, कियो प्रकाशन तात।
गुप्त रूप से जो रह्यो, सो प्रकटो है भ्रात॥
सो प्रकटो है भ्रात, भक्ति की गंगा आई।
भागीरथ 'बृजनाथ', कृपा सों रही लखाई॥
कह कवि 'रामगोपाल' श्याम प्रेरणा बढ़ावें।
'राम कहानी' 'पदावली', आदिक पढ़वावें॥

* * *

'श्यामसुन्दर की शरण' में, भक्त हृदय 'बृजनाथ'।
करें कृपा, दें प्रेरणा, धरें हस्त रघुनाथ॥
धरें हस्त रघुनाथ, भक्ति की बहे त्रिवेनी।
सन्त हृदय की विनय, बने कलि काल नसेनी॥
कह कवि रामगोपाल, 'श्याम' नहिं दरसन पायो।
'विनय बाटिका' विचर, पास में ही लखवायो॥

पुनश्च=

'बृजुआ' सखा श्री राम के, हम सबके हैं तात।
कब अहिएँ अब वो दिवस संग सखा के आत॥
संग सखा के आत, सखा सों हमें मिलावें।
सखा करें यदि मना, सोंह दे करके लावें॥
कह कवि रामगोपाल, सखा सों बाढ़े प्रीति।
'सुन्दर श्याम' सुजान, कृपा की सुन्दर रीती॥

रामगोपाल
कोषाध्यक्ष
विद्युत वितरण मण्डल
उ० प्र० रा० वि० परिषद
आगरा

'विनय-बाटिका' प्रकाशित होने के पश्चात् इस बार चैत्र शुक्ला पूर्णिमा संवत् २०३७ वि० को परम पूज्य श्री बाबू जी का ११२ वाँ जयन्ती पावनोत्सव घर पर मनाया गया। भगवद्भक्त पधारे। श्रीराम प्रेम पीयूष पूरित श्री बाबूजी की रचनाओं द्वारा श्री भगवदाराधन का भव्यस्वरूप बना, उत्साह और आनन्द रहा। इस उत्सव के आयोजन की बात ज्ञात होने पर पं० श्री रामप्रकाश दीक्षित के मन में यह भगवतप्रेरणा हुई कि सु रचनाकार श्री बाबू जी पर ही रचना की जाय। फलस्वरूप उन्होंने कुछ भाव सुमन श्रद्धा सूत्र में पिरो, रचनारूपी माला श्रीराम रसार्णव निमग्न श्री बाबू जी को अर्पित की। इसमें भाव ही प्रधान है, कृपालु पाठक भाव ही ग्रहण कर आनन्द लेंगे।

रचना रूपी माला

(रचियता श्री रामप्रकाश दीक्षित)

हम सबका उद्धार कराने आये बाबूजी।
भटकें न जग जंगल में बचाने आये बाबूजी॥

भक्त और भगवन्त एक हैं, जैसे मूल की हों प्रतियाँ।
बिछुड़े हुओं को प्रभु से मिलाने आतीं हैं दिव्याकृतियाँ॥
हम को प्रभु के मग में लगाने आये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी॥१॥

सम्वत उन्नीस सौ छब्बीस के, चैत्र मास की पूनों को।
पूर्ण रूप चन्दा से प्रगटे, शीतल करने सूनों को॥
प्रभु की निर्मल भक्ति बहाने आये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी॥२॥

पिता पूज्य श्री कृष्ण लाल जी, गेंदो देवी माँ का नाम।
फरुखाबाद में प्रगट हुए थे, भक्तों का करने शुभ काम॥

जल थल नभ सब मगन हुए जब पाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।३।।

नाम मनोहर पाया था, सबको सुख देने वाला।
श्याम सुन्दर जो राम रूप हैं, उनकी शरण लेने वाला ।।
मोदलता और श्याम नाम कविताये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।४।।

बालक पन से राम भजन में, लग लग के आनन्द लिया।
अपनी बोलनि और रहनी से, मातु पिता को सुख दीया ।।
जग मर्यादा हेतु बिवाह कराये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।५।।

रेल बाबू के पद पै रहे थे, बाबूजी यों नाम कहाया।
'श्याम' नाम से रचना करके, श्री रघुबर को बहुत रिझाया ।।
समय समय प्रभु राम ने दुलराये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।६।।

रेल माल बाबू पद पर रहकर, सत्य निष्ठ हो काम किया।
मन में प्रेम भक्ति जब बाढ़ी, उस को भी तब त्याग दिया ।।
स्वामी स्वरूपा नन्द संग रहाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।७।।

बरसा और अँधियारी रात में, स्वामी जी से मिलने धाये।
कठिनाई अनेक आईं थीं, फिर भी आपने दर्शन पाये ।।
सत्य नेह ऐसा होता, सिखलाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ।।८।।

देना इनको इतना रुचता, सोचा नहीं पात्र बारे में।
देने वाले प्रभू हमारे, नहिं अस्तित्व मेरा न्यारे में ।।

माध्यम मुझे बनाया यही बताये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराते आये बाबूजी ॥९॥

कठिनाई अनेक आईं थीं बाबूजी के जीवन में।
फिर भी मस्त रहा करते थे जैसे फूल हो उपवन में॥
कठिनाई में राम कृपा ही पाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१०॥

भक्ति मूर्ति गुणों के सागर, अद्भुत स्वभाव वाले थे।
रघुबर प्रेम रंगाये रहकर भक्तों के रख वाले थे॥
हँस हँस के भक्तों को गले लगाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार करानें आये बाबूजी ॥११॥

श्री रामचरित मानस के उपासक, दैन्य भाव अति रखते थे।
सदा प्रसन्न चित्त रहकर भी, शीश झुकाये रहते थे॥
गुप्त रूप सों भजन भाव अपनाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१२॥

रामायण महिमा अपार है, भव सागर से करतीं पार।
श्री रघुबर से ये हैं मिलातीं, ऐसा था पावन सु विचार॥
भक्तों पै श्री राम सुधा बर्षाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१३॥

श्री माँ गंगें पावन करनी, में-थी श्रद्धा अति भारी।
नित प्रति जाकर मज्जन करते, पूजा करते अति प्यारी॥
गंगा रज भी पावन करनी जतायें बाबूजी।
हम सब का उद्धार करानें आये बाबूजी ॥१४॥

उड़िया बाबा हरि बाबाविक, सन्तों से था प्रेम घना।
संत सभी श्री राम रूप हैं, ऐसा इनका चित्त बना॥
संत संग में भी रहते सकुचाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१५॥

गृहस्थ जीवन में भी धारी, दया क्षमा और कोमलता।
जग का करते हुए कार्य भी, मन श्री राम लीन रहता ॥
जल में रहके कमल सी रहनि रहाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१६॥

नगर हाथरस आप पधारे, बड़ी कृपा है तब कीन्हीं।
अनुमति चित्र खींचने की दे, यादगार सब को दीन्हीं ॥
चित्र के द्वारा जन जन ने लख पाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१७॥

सदा आपने छिपना चाहा, लेकिन फिर भी छिप न सके।
चन्दन की सुगन्ध ज्यौं उड़ती, यों भक्ति सुगन्ध सों छिप न सके ॥
सज्जन और असज्जन ने भी मनाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१८॥

चित्रकूट और अवध धाम को, बाबूजी जाया करते थे।
कभी बालक कभी अन्य वेष में, रघुवर को पाया करते थे ॥
हमें आप श्री राम दोऊ मिल दरश दिखायें बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥१९॥

यह नभ जैसे पूर्ण चन्द्र की, शोभा से शोभित होता।
बाबूजी को पाकर ऐसे, यह जग भी मोदित होता ॥
भक्त मंडल में 'श्याम' चन्द्र प्रगटाये बाबूजी।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥२०॥

दीक्षित रचना करन न जाने, प्रभु प्रेरित होकर लिख पाया ।
भूल चूक सब क्षमा ही करके, करते रहना सदा ही दाया ॥
मेरी श्रद्धा माला को पहिराये बाबजी ।
हम सब का उद्धार कराने आये बाबूजी ॥२१॥

पुरुषोत्तमी
प्रथम एकादशी
अधिक ज्येष्ठ
संवत् २०३७ विक्रमी

मंगल मय प्रभु श्रीराम राघवेन्द्र
एवं परम पूज्य श्री बाबूजी
की पारस्परिक लीला का
एक माध्यम
युगल श्री की सु कृपा सिंचित
युगल श्री का ही—बालक,

बृजनाथशरण अरोड़ा
रामजी द्वारा, हाथरस,

॥ श्री जानकीवल्लभोविजयते ॥

* अनुक्रमणिका *

पद संख्या	अष्टयाम केलि	पृष्ठ संख्या
१५.	राजभोग को समय सुहायो	२८
१६.	मनमोहन प्रिअ महल पधारे	२९
१७.	श्री सीतापति राम सोहनिआँ	३०
१८.	राजत राज समाज आज दोउ	३०
१९.	आजु प्रभु मृगया केलि रचाए	३१
२०.	आजु बन मंगल मोद भरो	३२
२१.	परम दिव्य जलजात बिशद बर	३३
२२.	बिलसत जुगुल छवि अवगाँहिं	३३
२३.	बिहरत युगुल उपबन माँहिं	३४
२४.	जल केलि कल समर की—कैसी बहार प्यारी	३५
२५.	आजु सखि केवट आप भए	३५
२६.	सुनिअत सागर सेतु बँधायो	३६
२७.	राजत जुगुल किशोर आज री	३७
२८.	ब्यारू करत सखन के संग	३७
२९.	राजत जुगुल किशोर हरत मन	३८
	अलिजन केलि छद्म लीला	
३०.	लपटी बिटपैं सहि सीतरु घाम	३८
३१.	वर गिरि पै जँहँ महराज विराज	३९
३२.	रुचिर अयुत शशि सह फल लाई	३९
३३.	जलजा धरि मालिनि रूप तबै	४०
३४.	कंचन कटोरिन सुरंग रस बोरिन पिअ	४०
३५,	व्यापी नहिं नारद भले ही पाइ पिअ रुख	४०
३६.	विमल अयुत जस सारद सेसा	४१
३७.	कंचन अयुत थार भरि लाई	४२
३८.	क्षेम आस तुमरे ढिग आई	४२

पद संख्या	अष्टयाम केलि	पृष्ठ संख्या

पद संख्या	अष्टयाम केलि	पृष्ठ संख्या
६४.	चलौ सखि तिजिआं आजु मनावैं	६३
६५.	आजु सखि कंचन दिवस सुहायो	६४
६६.	आयो आयो री सावनवा–साजे विधि सब विधि सुख साज	६५
६७.	आजु हहिं भींजत जुगुल किशोर	६५
६८.	लहरिआ लोनी लहरि लखाइ	६६
६९.	झूलत लाल, लाड़िली झुलवति	६७
७०.	झूलत लाड़िली, लाल झुलावैं	६७
७१.	झूलत लाल–लाड़िली सोहैं	६८
७२.	झुमकि, झुकि झूलत जुगुल किसोर	६९
७३.	जनक जनक ते अधिक पूज्य वन्दित मुनिराजा	७०
७४.	आज सुदिन शुभ घड़ी सुहाई	७०
७५.	नमो श्री तुलसी पद-जलजात	७१
७६.	सुख सानी सलूनों सलोनी री	७२
७७.	सखि आजु सलूनों सलोनी सी	७२
७८.	प्रगटे रविकुल दिनेश—यदुकुल शशि मनिआँ	७३
७९.	रघुबर जदुबर आज भए री	७४
८०.	आज जनक तनया प्रगटानी—श्री कीरति बृषभानु सदनिआँ	७४
८१.	जय महि धर जय जयति अनन्ता	७५
८२.	आज शरद रस रास सुहावनि–मनमोहन मनमोहनि प्यारी	७५
८३.	चलौ री अपने हु भाग भरावैं	७६
८४.	आज दोउ बदि बदि पाँसे ढारैं	७६
८५.	धन्य मास मगसिर सित पाँचैं	७७
८६.	आजु वसन्त लसन्त चराचर—सन्त जनन घर वजत बधाई	७७
८७.	आजु हरि खेलत होरी—नमत लखि मदन करोरी	७८
८८.	आजु पिअ गए इतराई—कसर सब लेहु कढ़ाई	७९
८९.	ऐसी हरि खेलत होरी	८०

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

अष्टयाम केलि-कलाकर

परमाराध्य युगल निधि श्री सीताराम जी



प्रेमिन के सर्वस्व प्रभु, मनहर सीताराम।
भक्तन की राखैं रुची, सब बिधि सुखद ललाम ॥

अष्टयाम केलि-कार

नित्य लीला लीन-रसिकवर श्री बाबूजी

श्री श्यामसुन्दर शरण जी



'अष्टयाम केलि में" में—रस मोदलता

सखी के नाम रूप एवं भाव से

❖ परम कृपालु श्री सद्‌गुरु भगवते नमो नमः ❖

अष्टयाम केलि

प्रणेता

नित्य लीलालीन
(परम पूज्य श्री बाबूजी श्री श्यामसुन्दरशरण जी)



इस अष्टयाम केलि के प्रणेता परम पूज्य श्री बाबूजी का संक्षिप्त परिचय देना अति आवश्यक है।

हमारे परम पूज्य श्री बाबूजी फर्रुखाबाद में मौहल्ला गोहाय में अपने निवास स्थान पर विराजते थे। आप रेल विभाग में माल बाबू (गुड्स क्लर्क) रहे थे, इस कारण आपको आबाल, वृद्ध परिजन एवं परिवारीय जन तक प्रायः सभी बाबूजी कहते थे, अतः आपकी प्रसिद्धि नगर में तथा बाहर बाबूजी के ही नाम से थी। अपनी रचनाओं में आप अपने को 'श्याम' नाम से प्रस्तुत करते थे। किन्तु इस अष्टयाम केलि में 'रस मोद लता' सखी के रूप व नाम से भी अपने को प्रस्तुत किया है, जिससे मधुर भाव में और मधुरिमा छा गई है।

इसी मौहल्ला में बाल्यावस्था में मुझे भी अपने पूज्य चाचाजी "श्री बाँकेलाल" अरोड़ा के यहाँ रहने का सुयोग हुआ। मेरी आयु ग्यारह बारह वर्ष के लगभग रही होगी मैंने परम पूज्य श्री बाबूजी की प्रशंसा सुनी और सुना कि प० पू० श्री बाबूजी को भगवत साक्षात्कार हो गया है। तब मेरे मन में प० पू० श्री बाबूजी के प्रति अति श्रद्धा जगी आपको मैंने श्री गुरु रूप में वरण करने का निश्चय किया। तत्पश्चात् समय पाकर निवेदन किया, पर आप तो परम दैन्य रूप से रहते, गर्दन को प्रायः नीचे ही किये रहते, चलते तक में सिर झुकाये चलते थे। ऐसा परम दैन्य का स्वरूप रखकर आप अपने को छिपाये रहते। आपने मुझको टालने की बहुत चेष्टा की, अन्य संत की शरण होने को कहा, पर मेरा मन तो इन्हीं श्री चरण कमलों का आश्रय ग्रहण कर चुका था। अतः मेरे हठ को देखकर आपने अपने परम कृपालु, कोमल स्वभाव वश मुझ दीन-हीन अधम-अयोग्य को अपनाकर कृतार्थ कर दिया।

राखा मोर दुलार गुसाईं। अपने सील सुभाय भलाईं॥

हाँ तो सुना था प० पू० श्री बाबूजी को भगवत्साक्षात्कार हो गया है किन्तु आगे चलकर अनुभव हुआ कि परम पू० श्री बाबूजी स्वयं भगवत् स्वरूप ही थे। सिद्धान्ततः भी—

भक्ति, भक्त, भगवन्त, गुरु, चतुर नाम बपु एक।

* * *

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

प० पू० श्री बाबूजी भगवत्स्वरूप होते हुए भी अपने को प्रायः छिपाये रहते थे। कहते भी थे कि गुप्त रूप से भजन करना चाहिये जिससे विदित न हो। उदाहरण देते कि पुलिस दो प्रकार की होती है, एक प्रत्यक्ष पुलिस जिसकी वेषभूषा, व्यवहार से पता चल जाता है कि यह पुलिस है। दूसरी खुफिया पुलिस, जिसकी वेषभूषा, व्यवहार से पता ही नहीं चलता कि यह पुलिस है किन्तु कार्य दोनों ही सरकारी करते हैं। दोनों ही सरकारी व्यक्ति हैं वरन् प्रत्यक्ष पुलिस से खुफिया पुलिस को अधिक वेतन, अधिक अधिकार मिलते हैं। इसी प्रकार खुफिया पुलिस की तरह गुप्त रूप से सरकारी कार्य भगवत भजन, चिन्तन, पाठ, सदाचार आदि का पालन करो, बाहर प्रकट न हो।

प० पू० श्री बाबूजी का जीवन निराला जीवन, आदर्श जीवन था। दीनता, कोमलता, कृपालुता और प्रेम के तो आप मूर्तिमान स्वरूप ही थे। बड़े-बड़े सन्त महात्माओं से आपकी अति घनिष्टता रहती। एक प्रेमी सन्त स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी महाराज की तो आपने विलक्षण जीवनी लिखी है जिनसे आपका विशेष सम्पर्क रहा था। इस पुस्तक का नाम है 'सन्त मणि प्रकाशिका' जो सम्वत् १९७९ में प्रकाशित हुई थी। इसमें कितने ही सन्त महानुभावों का वर्णन आया है। यह साधकों तथा भक्तों के लिए अतीव प्रेरणाप्रद है, जो अब सम्वत् २०३५ में पुनः प्रकाशित हुई है।

"श्री मानस टीकाकार" प्रयाग के त्रिवेणी बाँध गुफावाले सुप्रसिद्ध नागा बाबा प० पू० श्री अवधबिहारीदास जी "परमहंस" से भी आपका संबध रहा मिलना जुलना श्री मानस पर सत्संगादि होता। दि० १९-३-४७ को पूज्यपाद श्री परमहंस जी महाराज को साकेत यात्रा के समय भी परम पूज्य श्री बाबूजी प्रयाग में ही थे। वहाँ से लौटने के बाद दि० २४-३-४७ को एक पत्र फर्रुखाबाद से मुझको

लिखा उसमें श्री परमहंस जी के सम्बन्ध में भी लिखा था उसका सारांश यह है।

श्री पूज्यपाद महाराज श्री १००८ परमहंस जी श्री श्री मानस जी की सुटीका प्रसिद्ध कर साकेत यात्री हुए उन्होंने इस घोर कलिकाल के भाग्यरंक अधम जीवों पर सकरुण हो श्री श्री मानस जी की खलों से ताल ठोंक रक्षा की। वे ऐसे महा समर्थ महान आत्मा थे। बहुत समय हुआ जब मैंने एक नोटिस देखा कि नूतन बालकाण्ड प्रकाशित हो गया है उसमें केवल मूल शब्द रखे गए हैं। श्री मनुशतरूपा की तपस्या, प्रतापभानु प्रसंग, पुष्प बाटिका की कथा इत्यादि सब क्षेपक मान निकाल दी गयी हैं। और यह भी लिखा था जो कोई हमारी बात को अप्रमाणिक सिद्ध कर दे उसे ५००) रु० देंगे। अन्यथा हमारी मानस का सर्वत्र प्रचार हो। शेष कांड भी क्षेपक निकाल कर छापे जाने वाले हैं। इस भयद नोटिस को देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो उठा कि श्री मानस जी के मुख्य प्रसंग क्षेपक सिद्ध कर उनके स्वरूप को विकृत करने वाला असुर किस प्रकार पलायमान होगा—अन्ततः मैंने श्री अवधधाम के पूज्यपाद श्री सन्तों की सेवा में पत्रों द्वारा श्री मानस रक्षा का निवेदन किया। आखिर में इन्हीं पूज्यपाद श्री १००८ परमहंस जी ने उसका सर्वतः सम्यक समाधान कर उससे अगीकार (लिखित) करा लिया उसका प्रकाशित नूतन बालकाण्ड रद्द हो गया, वह असुर चारों खाने चित्त कर दिया गया। श्री मानस के कुतर्कियों का सदा मुख भंजन करते रहे।

इनके उपलक्ष्य में निम्नोक्त छन्द भी रचा था—

चहूँ ओर चुगल चलाकन की धूम होत,
बबुर बहेर बोइ, तुलसी उजारते।
मानस मलिन पीन पापनि सुधाइ धाइ,
आइ बक काक कंक मानस बिगारते॥

कलि के कुचालो क्रूर दम्भ मद मान भरे,
जाहिर जहान जोति जुगुन जगावते ।
परमहंस अवधबिहारी बपु धारी जो,
श्याम जग अवध बिहारी ना पधारते ।।

भगवान श्री राम के पावनधाम श्री अवध में श्री लक्ष्मण किले के तत्कालीन महन्त परम रसिक सुसन्त पूज्यपाद श्री जानकीवरशरण जी के पास जाना आना सत्संगादि होता रहता। सर्व प्रथम एक पुस्तक 'विनय माला' की रचना कर इन्हीं महापुरुष श्री लक्ष्मण किलाधीश को समर्पण की ।

श्री अवध में ही जानकी घाट निवासी सुसन्त पूज्यपाद श्री रामबल्लभाशरण जी, श्री हनुमत निवास के पूज्यपाद श्री गोमतीदास जी एवं प० पू० श्री रूपकला जी प्रभृति से मिलना जुलना सत्संगादि होता । तथा जानकीघाट के ही परम पूज्य सन्त श्री रामकिशोर जी वकील साहब से तो घनिष्टता रही ।

प्रयाग झूँसी के सुप्रसिद्ध सन्त पूज्यपाद श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी जी महाराज एवं सुप्रसिद्ध सन्त पूज्यपाद श्री नारदानन्द जी महाराज (नैमिषारण्य) से भी घनिष्टता रही ।

एक बार श्री चित्रकूट पधारे तो स्वयं प्रभु श्री रामजी ने एक बालक के बेष में आकर श्री चित्रकूट के गुप्त स्थलों तक का दर्शन कराया जिसको एक पद में भी श्री राम जी को याद दिला रहे हैं—

चित्रकूट कानन दरसाए-गुप्त केलि कल धाम ।

गीता प्रेस गोरखपुर "कल्याण" के संस्थापक पूज्य सेठ श्री जयदयाल जी गोयन्दका से भी मिलना जुलना सत्संग पत्र व्यवहार होते रहते । श्रीयुत श्री प्रकाश जी के पिता वाराणसी के डाक्टर आदरणीय श्री भगवानदास जी ने कवितावली की टीका करके आपको भेजी थी ।

आपका परम प्रसिद्ध सन्त शिरोमणि श्री उड़िया बाबा जी महाराज, श्री हरिबाबा जी महाराज से भी सम्बन्ध रहा। परम प्रसिद्ध सन्त शिरोमणि श्री हरिबाबा जी महाराज से तो घनिष्ट सम्बन्ध रहा। परस्पर में एक दूसरे को प्रेम एवं श्रद्धा पूर्वक साष्टाङ्ग दण्डवत करते। यहाँ तक कि प० पू० श्री हरिबाबा जी महाराज प० पू० श्री बाबूजी को पिता तुल्य मानते और प० पू० श्री बाबूजी का चित्र अपनी नित्य पाठ की पुस्तक में रखते थे।

एक बार न मालूम कैसे प० पू० श्री बाबूजी का चित्र अदृश्य हो गया तब परम पूज्य श्री हरिबाबा जी ने प० पू० श्री बाबूजी के सुपुत्र सुभक्त श्री पुरुषोत्तमदास जी से चित्र के लिए कहा श्री पुरुषोत्तमदास जी ने मेरा परिचय देते हुए कहा कि इनके पास चित्र है ये और बनवाकर आपको दे जायेंगे। फिर कुछ समय बाद मैं चार चित्र लेकर उपस्थित हुआ। तब परम पूज्य श्री हरिबाबा जी ने कहा कि "कितने ले लैं" मैंने निवेदन किया जितने आप चाहैं। तब प० पू० श्री हरिबाबा जी ने दो चित्र ले लिए। ऐसी थी प० पू० श्री बाबूजी पर प्रीति।

परम पूज्य श्री बाबूजी ने एक ग्रन्थ "राम कहनियाँ" पद्य में लिखा तथा एक ग्रन्थ गद्य में 'राम बोध प्रकाश' दो भागों में लिखा। इन दोनों ग्रन्थों को प० पू० श्री हरिबाबा जी को समर्पण किया गया। एकबार फर्रुखाबाद में चातुर्मास प्रवास करने पर प० पू० श्री हरिबाबा जी ने 'श्री राम बोध प्रकाश' को स्वयं प० पू० श्री बाबूजी से सुना। यह ग्रन्थ, श्रीरामलीला के श्री रामरूपधारी, श्रीरामबोध जी की लीला, कृपा एवं अनुभवों से परिपूरित है।

यहाँ तक आप दोनों की साम्यता थी कि दोनों ही लीला बिहारी श्री भगवत स्वरूपों में अति निष्ठा रखते तथा दोनों ही

दैन्य भाव से नीचे को गर्दन, नीचे को दृष्टि किए रहते। आवश्यकता होने पर ही ऊपर को दृष्टि करते। प० पू० श्री हरिबाबा जी प० पू० श्री बाबूजी को साष्टाङ्ग दण्डवत करते इससे प० पू० श्री बाबूजी को अति संकोच होता। एक दिन प० पू० श्रीबाबूजी ने प० पू० श्री हरिबाबा जी से निवेदन किया कि आप ऐसा न किया करें, इससे तो हमारा पतन हो जायेगा आदि। तब प० पू० श्री हरिबाबा जी ने प्रत्यक्ष रूप से दण्डवत न करने की बात मान मानसिक रूप अपनाया।

प० पू० श्री हरिबाबा जी प० पू० श्री बाबूजी पर कितना स्नेह एवं श्रद्धा रखते इसका एकबार ज्वलंत उदाहरण बाँध पर उपस्थित हुआ। जब प० पू० श्री बाबूजी बाँध पर पधारे हुए थे, वहाँ पर रहते हुए कितने ही दिन बीत गए किन्तु प० पू० श्री हरिबाबा जी जाने ही नहीं देते थे। तब एक दिन प० पू० श्री बाबूजी ने निश्चय किया कि कल जाना है। बस इतना सुनना था कि प०पू० श्री हरिबाबा जी को बहुत जोर का ज्वर हो आया और अस्वस्थ हो गए। यह बात परम पूज्य श्री बाबूजी को विदित हुई और प० पू० श्री बाबूजी समझ गए कि यह लीला हमारे जाने के कारण ही रची है। तब परम पूज्य श्री बाबूजी, प० पू० श्री हरिबाबा जी के समीप गए तथा स्थिति देखी, बहुत तेज ज्वर, मुख लाल हो रहा, पास बैठे रहे, फिर बोले, "महाराज की ऐसी इच्छा है तो अब हम कल नहीं जायेंगे"। इतना सुनते ही प० पू० श्री हरिबाबा जी का ज्वर जाता रहा और स्वस्थ हो गए ऐसी थी इन महान विभूतियों में पारस्परिक विलक्षण प्रीति—

इनकें प्रीति परस्पर पावनि। कहि न जाय मन भाव सुहावनि

प० पू० श्री हरिबाबा जी की जीवनी के अन्त में जो पद छपा है, वह प० पू० श्री बाबूजी द्वारा ही रचित है। प० पू० श्री हरिबाबा जी की प्रसन्नतार्थ महाप्रभु श्री गौराङ्गदेव के सम्बन्ध में भी पद रचना प० पू० श्री बाबूजी ने करी थी।

प० पू० श्री बाबूजी भगवान (श्री रामजी) को प्रायः महाराज कह कर सम्बोधित करते। भगवद भजन,ईश्वरचिन्तन, सदाचार, प्रेम और दैन्यभाव के तो आप स्वरूप ही थे। इतना दैन्यभाव अपनाये रहते कि मुझ जैसे अल्पवयस्क, स्वाश्रित, बालक को वयोबृद्ध श्रीगुरुदेव होते हुए भी पत्र लिखते तो श्रीमच्चिरंजीव आदि आदि लिख कर बृजनाथ शरण लिखते ऐसा परम दैन्य देखने सुनने में नहीं आया।

अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ।

आप अपना चित्र भी नहीं खिचवाते थे। मैंने विविध प्रकार से आग्रह किया किन्तु टालते रहे। फिर जब कृपा कर एक बार हाथरस पधारे तब मैं हठ पड़ गया और अपने भावानुकूल विराजमान कर माला धारण कराई और चित्रकार ने चित्र (फोटो) खींच लिया, जो निधि रूप में आज भी उपलब्ध है तथा अन्य भक्तों को भी सुलभ हो सका। ऐसा था उनका संकोची स्वभाव। कहते थे कि चित्र तो भगवान का ही आराधनीय है।

कलिमल हारिणी, पतित पावनी, भगवद् प्रेम प्रदायिनी श्री रामायण जी (श्री रामचरित मानस) के प्रति आपकी परम निष्ठा थी। श्री रामायण जी नित्य पाठ करने को कहते, श्री रामायण पाठ से श्री राम भगवान का दर्शन सुलभ मानते तथा यह भी कहते कि किसी कारणवश अस्वस्थता आदि से पाठ न हो सके तो दर्शन अवश्य कर लेना चाहिये। श्री रामायण जी के दर्शन से भी परम पुण्य होता है। बालकाण्डान्तर्गत दोहा १५ के बाद–बंदउँ अवधपुरी अति पावनि,

सरजू सरि कलि कलुष नसावनि । से लेकर दोहा १८ तक की बन्दना नित्य करने को कहते । श्री रामायणजी की कृपा के अनेकों चमत्कार परम पूज्य श्री बाबूजी के सामने आये ।

श्री चन्दादेवी नाम की एक ब्राह्मण कन्या थीं । वह विधवा हो गईं, उनको सान्त्वना देते हुए आपने श्री रामायण जी का प्रतिदिन एक पाठ करने को कहा । उन्होंने आज्ञानुसार एक सौ आठ पाठ, एक सौ आठ दिन में किये । जिससे उनको परम शान्ति मिली तथा श्री रामजी में अनुराग हो गया । यह श्री राम भक्ति में इतनी प्रबल हो गईं कि परम पूज्य श्री बाबूजी ने इनकी बंदना स्वयं इस प्रकार की है—

नमो भक्ति सहचरि श्री चन्दा । हरनि दोष, दारिद दुख द्वन्दा ।।१।।
राम-अयन नित रहत लुभाई । श्री पद तजि कवनिहुँ नहिं जाई ।
तन मन प्रभु सेवा रहि पागी । जग प्रपंच सों सदा विरागी ।।२।।
नेम प्रेम दिन दिन अधिकाई । चातक, मीन निरखि सकुचाई ।
तनु कृश मन रघुवर बल भारी । समरथ, अधम उधारन हारी ।।३।।
अमित पाठ रामायन कीनी । निसिदिन, जुगुल प्रेम रस भीनी ।
महिमा अतुल बुद्धि लघु जनकी । भगनी नात, पूर करि पनकी ।।४।।

परम पूज्य श्री बाबूजी इनको धर्म बहिन करके मानते थे ।

श्री रामायण जी का पाठ कर विश्राम सुन्दर स्थान पर देना चाहिये, ऐसा भी आप कहते थे अर्थात रोष विषाद आदि के प्रसंग पर विश्राम नहीं देना चाहिये ।

इस प्रसंग की भी एक घटना है:—

श्री काशी के पास रामनगर की श्री रामलीला बहुत प्रसिद्ध है । एक बार आप वहाँ पधारे । लीला का दर्शन कर रहे थे पीछे बैठकर श्री रामायण गायक महोदय ने विश्राम ऐसे ही रोष पूर्ण स्थल पर दिया जो प० पू० श्री बाबू जी को अरुचिकर लगा । इससे लीला

बिहारी श्री रामजी के नेत्र लाल-लाल हो गये और रोष में भरे रहे। लोगों ने आश्चर्य किया कि क्या बात हो गई ? अतः श्रीराम जी से प्रार्थना करी कि क्या कारण है ? तब श्री रामजी ने प० पू० श्री बाबू जी की ओर सकेत कर कहा "वह जो बैठे हैं उनसे पूछो" प० पू० श्री बाबूजी से पूछा गया तब आपने बताया कि विश्राम सुन्दर स्थान पर देना चाहिये अतः अब आप अमुक स्थान पर विश्राम दीजिये। प०पू० श्री बाबूजी के बताये स्थान पर विश्राम दिया गया तब श्री रामजी शान्त हुए। आप यहाँ तक कहते कि यदि दोहा पर उपयुक्त विश्राम न हो तो चौपाई पर ही विश्राम दो, पर विश्राम सुन्दर तथा उपयुक्त स्थान पर ही देना चाहिये।

प्रातः स्मरणीय, चिरवन्दनीय सन्तशिरोमणि कविकुल-चक्र चूड़ामणि गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज विरचित श्री विनय पत्रिका के तो आप प्रकाण्ड पण्डित थे। ऐसे-ऐसे रहस्यमय भाव कहते कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज पर आपकी अगाध श्रद्धा एवं प्रीति थी। आपके काव्य में भी श्री गोस्वामी जी महाराज का व्यापक प्रभाव है।

फर्रुखाबाद के निवासी इलाहाबाद के जज साहब श्री महेशप्रसाद जी माथुर परम भक्त थे। वह प० पू० श्री बाबूजी पर बहुत श्रद्धा करते। प० पू० श्री बाबूजी जज साहब के यहाँ मौहल्ला सिकत्तर में फर्रुखाबाद वाली कोठी पर पधारते थे। श्री जज साहब प० पू० श्री बाबूजी को अति आदर पूर्वक विराजमान करके उनके पदत्राण (जूते) स्वयं अपने हाथ से उठाकर रखते और परम विनीत भाव से बैठते। वहाँ पर भी प० पू० श्री बाबूजी श्री विनयपत्रिका के पद की व्याख्या कर रहस्यमय भाव प्रकट करते। यहाँ तक कि स्वयं प० पू० श्री बाबूजी ने भी एक ग्रन्थ "विनय-बाटिका" की रचना पदों में की है। जो गत वर्ष सम्वत् २०३६ विक्रमी में प्रकाशित हुई है।

मठिया देवी के पास श्री रघुनन्दन जी गोस्वामी के यहां प्रायः नित्य सायंकाल सत्संग में पधारते और श्री रामायण जी, विनयपत्रिका आदि पर सत्संग करते।

पतित पावनी भगवती श्री गंगा महारानी में भी आपकी अपूर्व प्रीति व श्रद्धा थी। प्रायः नित्य ही श्री गंगा स्नान को पधारते। वृद्धावस्था होते हुए भी श्री गंगा स्नान नहीं छोड़ना चाहते जबकि श्री गंगा जी घर से बहुत दूर थीं आपकी प्रतिमूर्ति आपके सुयोग्य प्रभक्त एकमात्र सुपुत्र श्री पुरुषोत्तमदास जी जयपुर रहने लगे थे किन्तु श्री गंगाजी दर्शन, स्नान के कारण आप उनके पास वहाँ नहीं रहते थे। आवश्यकता होने पर यदा कदा चले जाते कुछ समय रहकर फिर फर्रुखाबाद ही लौट आते। अन्तिम समय से पूर्व श्री पुरुषोत्तमदासजी लिवाने आये, हठ किया चलने को, तब आपने कहा तुम हमारा श्री गंगा स्नान छुड़ाओगे, कहकर जयपुर पधारे। अन्तिम समय में आप जयपुर (राजस्थान) में ही पुरुषोत्तमदास जी के पास विराज रहे थे। वहीं पर आपने समस्त वासनाओं, इच्छाओं से रहित पावन अन्तःकरण से भगवत प्रीति युक्त श्री राम नाम रटते हुए इस पांच भौतिक कलेवर को त्याग नित्य लीला में प्रवेश किया। आप इस धरा धाम पर अस्सी बर्ष तक विराजे।

तत्पश्चात् उनके पंचभौतिक कलेवर को श्री गंगाजी में उनकी विशेष श्रद्धा होने के कारण जयपुर से कार द्वारा फर्रुखाबाद लाया गया। और पुण्य सलिला भगवती भागीरथी के पावन तट पर अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई। इस अवसर पर बहुत से भक्त उपस्थित थे।

आपके जीवन की अनेक घटनाएँ हैं भगवत् निष्ठा एवं भगवत कृपा की। समय समय पर भगवान श्री रामजी कैसे-कैसे किन-किन रूपों में लीला व योग क्षेम वहन करते थे, वह सब लिखना यहाँ

सम्भव नहीं क्योंकि यहाँ ता परिचय मात्र देना है। परिचय भी वह दे जो पूर्ण परिचित हो, अधिक संग रहा हो, तब तो उचित भी है। मैं मन्द मति उन महामहिम को क्या पहचान पाता, फिर साथ रहने का सौभाग्य तो बहुत ही कम मिला है क्योंकि बहुत बाद में शरण में पहुँचा। जो जान पाया हूँ उस प्रयास का यह अल्पांश है। हाँ विनय-बाटिका के एक पद से कुछ इंगित होता है उस पद को यहाँ उद्‌धृत करना उचित होगा। वह पद—

कृपा सो कहाँ बिसारे ? राम !।
जन पन राखि, पूर आए, प्रभु सब दिन, सब मन काम ॥ १ ॥
द्विज मिसि दीन जगाइ, सरस जल-अवध धाम अभिराम।
चित्रकूट कानन दरसाए गुप्त केलि कल धाम ॥ २ ॥
स्वामि स्वरूप-अनन्द ओट तुम, नेह रीति प्रगटान।
काल-व्याल पल माँझ निवारे, कीन प्रगट निज बान ॥३॥
राम बोध पुनि बोध कराए, नाना चरित महान।
सो करुना हिअ सुमिरि अजहुँ प्रभु, उमगत उर हुलसान ॥ ४ ॥
छिन छिन बिजय दरस दै, दूनी-दिन दिन दया दिखान।
बाल केलि, धनु-भंग मनोहर, सो सुधि नहिं बिसरान ॥ ५ ॥
श्री करुणा रस हास रहस अति, लखि लखि हिअ हहरान।
समर केलि रस बीर धीर धुर, देखत होस हिरान ॥ ६ ॥
भरत मिलन, अभिषेक रहस अति, नैनन लहि बिसराम।
नित प्रति अमित कृपा करतब-तव, क्यों बरनौं गुन ग्राम ॥ ७ ॥
नाथ दई जिअ कल जो पूरब, रही न सो सब जान।
गहि कर एक बार कर अब क्यों, झटकत जीवन प्रान ॥ ८ ॥
अपनाए की लाज करहु प्रभु ! हँसी न होइ जहान।
सुन्दर श्याम रह्यो तब, अब का भयो असुन्दर बान ॥ ९ ॥

भलो बुरो, जैसो तैसो- प्रिय ! तुमरो तुमरो श्याम।
लेहु निबाहि देउ जनि बांओं, कर ले हहा गुलाम ॥ १० ॥

परम पूज्य श्री बाबूजी ने सब प्रकार से उपराम होते हुए भी अन्त तक गृहस्थ में ही रहकर उच्च आदर्श जीवन स्थापित किया फलतः अन्य जनों के साथ-साथ परिवारीय जन अनुज, अनुज बधू पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ, पौत्रियाँ तक भगवत भक्त बन गईं।

प० पू० श्री बाबूजी ने कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी किन्तु वह अपने को छिपाये रहते, यहाँ तक कि गुप्त रहने के कारण उनके सब ग्रन्थ प्रकाशित न हो सके वह नहीं चाहते थे कि उनकी प्रसिद्धि हो किन्तु प्रभु श्री रामजी तो जनकल्याण के लिए उनको प्रकाश में लाना ही चाहते थे, यही हुआ।

प० पू० श्री बाबूजी छिपते रहे पर भक्तों से अधिक न छिप सके। नगर के बहुत से विद्वान एवं भक्त भगवत कृपा से उनको पहिचान गये। फलस्वरूप प्रसिद्धि हो ही गई। उनके विशेष सम्पर्क में आने वाले थे पूज्य बाबू श्री रामचन्द्रजी (जो सन्त शिरोमणि श्री उड़िया बाबाजी के आश्रम, श्री बृन्दावन में रहने लगे थे और यहीं पर शरीर त्याग किया) पूज्य परम भक्त परम सौम्य, प्रसन्न वदन पं० श्री शीतलदीन जी, पं० श्री गंगाशरण जी, पं० कृपाशंकर जी, पं० श्री करुणाशंकर जी (इनको कितने ही समय तक एक पद नित्य नया लिखकर देते और ये श्री रामजी को गाकर सुनाते) जज साहब श्री महेशप्रसाद जी माथुर, सेठ श्री बाबूलाल जी बागला, सेठ श्री महादेव प्रसाद जी खेमका, सेठ श्री मदनमोहन जी कनोड़िया सेठ श्री हेमचन्द्र जी, लाला श्री रामभरोसे जी, लाला श्री सन्तलाल जी, लाला श्री मंगलसेनजी प्रभृति हाथरस के लाला श्री गंगासरन जी, श्रीजमनासरन जी बजाज आदि।

इस 'अष्टयामकेलि' के अतिरिक्त 'विनय बाटिका' 'विनयमाला' 'मन की मनुहार' श्री जनकपुर के सखा' 'पदावली' 'श्री राम कहनियाँ' 'प्रेम पचीसी' 'श्री केवट प्रेम चालीसा' 'सन्तमणि प्रकाशिका' श्री रामबोध प्रकाश' ग्रन्थों की रचनाएँ करीं। फुटकर पद भगवत जयन्ती पर्व आदि पर लिखे हुए भी बहुत से हैं।

आपकी रचनाओं में भ षा, भाव, अर्थ गाम्भीर्य अलंकार अभि-व्यञ्जना और सौन्दर्य देखते ही बनता है। भगवत भक्ति की परम पावन सहज धारा आपके काव्य की सुगंगा है जिसमें अवगाहन करने से मन पवित्र एवं हृदय भगवत अनुराग में रँग जाता है।

त्रुटि के लिये आप महानुभावों से क्षमा याचना करता हुआ, अपने परम कृपालु श्री सद्गुरु भगवान परम पूज्य श्री बाबूजी के पावन श्री पद कमलों में पुनः पुनः दीनता पूर्वक नमन करता हुआ—

उन्हीं के पुनीत श्रीचरणकमलाश्रित

बालक-बृजनाथशरण अरोड़ा

रामजी द्वारा, हाथरस (उ०प्र०)

श्री सीतारामचन्द्राभ्याँ नमः

स्तुति

श्री कोशलेश कृपालु कोमल समन अघ संसय हरं।
मुख चन्द शशि कर हास सुन्दर दोष दुख दारिद दरं ॥१॥
मुसकान मनहर मदन मान विभंज कल करुणाकरं।
नव नील नीरज नैन, मधुरे बैन सार सुधा झरं ॥२॥
चितचोर चितवनि चितै चोरनि चखन कोरनि रन ढरं।
वर भाल राजत तिलक जग मग वारिधर दामिनि धरं ॥३॥
सुठि श्याम कुञ्चित केस सोहन पुञ्ज अलि कल रस परं।
प्रति अंग कोटि अनंग लाजत अतुल छवि सुखमाकर ॥४॥

अभिलाषा

मन अस-बड़भागी कब बनिहौ।
सरजू-पुलिन कुञ्ज गहबर महँ सुख सनेह-रस सनिहौ। १॥
मत्र राज श्री नाम-अमिअ पिअ-जिअ की तपनि सु हनिहौ।
प्रीतम प्रिआ प्रेम मद छकि छकि-तन की सुध नहिं गनिहौ ॥२॥
सुन्दर सुभग सुजान जुगुल छवि-मृदुमाधुरी मगनि हौ।
यह अभिलास दूर ते दुरि दुरि-निरखि जिआ कछु, भनिहौ ॥३॥
पुनि हँसि प्रगट पानि पंकज गहि-पाँइन परि सनमनि हौ
टरहु न नेकु टेकु रखिहौ निज-निरधन के तुम धनि हौ ॥४॥
मृदु मुसकाइ रजाइ पाइ तब- उर गृह गहि हठ ठनि हौ।
श्याम जुगुल कीरति निसि बासर-सुधा खूब चखि जनि हौ ॥५॥

श्री अवध-वन्दना



नमो नमो श्री अवध सुहावनि–सुखद धाम सुखधाम सुभावनि ।।
पय पयोधि, वैकुण्ठ बिहाई–तोपै प्रीतम आवत धाई ।
कोटि कोटि ब्रह्मांडक नायक–तेरी गोद बिलसि रघुनायक ।
तो बिन पल कल नहिं प्रभु पावैं–तोर सुजस नित श्री मुख गावैं ।
निरवधि की तू अवधि सुपावनि–नमो नमो श्री अवध सुहावनि ।।१।।
जुगवति रहति तोहि चित चाई भुक्ति मुक्ति सेवहिं मन लाई ।
करुणारस भरि भूरि रहावै-अधम अनाथनि कहँ दुलरावै ।
तेरे नाथ और तू एकहि–करुणा निधि दोउन निगमन कहि ।
धामी धाम एक प्रगटावनि नमो नमो श्री अवध सुहावनि ।।२।।
जीव चराचर जे संसारा–सुमिरत तोहि मिटै भव भारा ।
आपनि महँ करि लेत जाहि जब–बसत ईस ढिग सो संतत तब ।
श्री सरजू 'प्रभु-प्रेम-पुनीता' लसत सदा तुव अंक बिनीता ।
त्रिविधि ताप भव दाप नसावनि–नमो नमो श्री अवध सुहावनि ।।३।।
श्री सरजू श्री अवध न भिन्ना–लालति पालति पतितन खिन्ना ।
बिहरत नित्य जुगुल सुख साने–सरजू अवध रटत पुलकाने ।
एक एक रज कन पर वारैं–तिहू लोक सुखमा सुख सारैं ।
आनँद सिन्धु पूर उमगावनि–नमो नमो श्री अवध सुहावनि ।।४।।
तीन लोक सीकर सुख साजै–सुख की सुख तूही भलि भ्राजै ।
श्री रघुबरहि रमावनि वारी–धन्य अवध तो पै प्रभु वारी ।
पतित सभीति कहूँ जे समाहि न–लालति पालति मातु तुही तिन ।
श्याम शरण राखहि सुख छावनि–नमो नमो श्री अवध सुहावनि ।।५।।

श्री अवधवासी-श्री अवध महिमा

प्रभु वाक्य

मोंहि अवधवासी अति प्यारे।
निसि दिन हौं सुमिरत हौं तिन कँहँ-
पल छिन उर ते होत न न्यारे॥१॥
जुगवत रहत सदा तिनके मन-
लाग रहौं पाछे सुधि वारे।
हौं बिसरत ना तिनहिं एक पल-
ते बिसरत ना मोंहि सदा रे॥२॥
खग मृग कीट लता तृन तरु सब-
अवध धाम के मोर दुलारे।
ब्रह्मादिक सुर सबहि सिहाहैं-
बड़े भाग मो पुर बसिआ रे॥३॥
भुक्ति मुक्ति लोटति महि रज मँहँ-
अवध धाम जस वेद उचारे।
(श्री) अवध अवधि करुणा की करुणा-
सिन्धु राम जन श्यामहु तारे॥४॥



अष्टयाम (भूमिका)

दोहा—लीला सरित सुहावनी-प्रेम प्रमोद प्रवाह ।
अलिजन आठौ जाम तँहँ-मगन मज्जि अवगाह ॥१॥
ज्ञान गिरा गोतीत जो-निगमहु अगम परेस ।
निरबिसेस अलिजन बिवस-होत सुगम सबिसेस ॥२॥
जुगुल रूप निधि हुइ प्रगट-नाना केलि रचाहिं ।
अलिजन मीननि के परम-जीवन प्रान सदाहिं ॥३॥
जो सुख दुरलभ अति अगम-बिधि हर हरि शुक शेष ।
सो अलिजन पग रज कृपा-सुलभ सदा सब देस ॥४॥
'सत् चित् सुख' रस माधुरी-मज्जन करि उमगाइ ।
कोटि भानु ससि तड़ित रति-कोटि मदन मद नाइ ॥५॥
सो रस अलिजन गहि लिए-हिए धारि रस रंग ।
जुगुल केलि मन हर मगन-रस माधुरी अभंग ॥६॥
जुगुल प्रिआ प्रीतम सहित-सहचरि पगतर धूरि ।
मोद लता जाँचति ह हा-दे दे जीवनि मूरि ॥७॥

पद

सुख सुखमा पाछे लगे डोलें ।
प्रीतम प्रिया जाँहि सखि जँहँ जँहँ-तँहँ तँहँ दोऊ करत किलोलैं ॥१॥
सुर तरु तरुन, मान सर सरनन-चिन्तामनि रज सँग लै तोलैं ।
ब्रह्मानन्द माधुरी रस सों-सकुचि नमत लघुता निज बोलैं ॥२॥
जुगुल केलि रस सुख अति अनुपम-और सबहि सुख तेहि बिनु पोलैं ।
रूप माधुरी जुगुल कमल कल-शुचि मकरन्द अमित अनमोलैं ॥३॥
अलि जन अलि लहि मगन रहति नित-औरहि अगम न पाव टटोलैं ।
मोद लता रस जुगुल कृपा बिनु-लहत न कबहुँ बजाए ढोलैं ॥४॥

*

अष्टयाम केलि

(श्री युगुल माधुरी बिलास)

मंगल वाद्य के साथ अलिजन एकत्रित

पद १

मंगल नौबत बाजन लागी।

बीती तीन पहर सुख रजनी-सजनी सजग भईं सब जागी ॥ १॥

हुइ शुचि, गईं सकल मिलि पुलकित-श्री यूथेश्वरि पाँइ न लागी।

सेज निकट आईं जुरि अलिजन-सुभग मनोहर पट ढिग रागी ॥२॥

मन्द मन्द कल कीरति गावति-प्रीतम प्रिआ प्रेम रस पागी।

सेवा सौज समाज साज सजि-तन मन जुगुल चरण अनुरागी ॥३॥

रमा उमादि बिरंचि अलि जन वपु-तिनके भाग सराहन लागी।

मनिआं नेह मोद रस भीनी-पोहत पुलकि सबै हिअ तागी ॥४॥

※

सखियों द्वारा श्री युगुल सरकार को जगाना

पद २

जगो जग जीवन जन मन चोर।

अलिगन भीर अधीर दरस बिनु-अरुन उदै भयो भोर ॥१॥जगो०॥

अरुन सिखा लागे प्रिय बोलन-खग कल रव सुख सोर।

बिकसे कंज सरनि अलि गुंजत-बिरद बदत सब ठोर ॥२॥जगो०॥

लै मधु मधुर निकसि सुमनन ते—भ्रमर भ्रमत रस बोर ।
मन्द मन्द घन सिसुगन घोरत—बालक केकि किलोर ॥३॥जगो०॥
झरत सुमन रस सुधा सलिल सम—अलिन वदन चहुँ ओर ।
बरसत सुखद मेघ जन सम जिअ—उठत अनन्द हिलोर ॥४॥जगो०॥
मन कर चोर जगहु, दुरिगे खल—कुटिल बिमुख धन चोर ।
सुनि उठि बैठ प्रिआ प्रीतम दोउ—चितै कृपा दृग कोर ॥५॥जगो०॥
आलस भर सुलेत जमुहाई—जुगुल अंग सुमरोर ।
मधुर मधुर मुसकात मोद रस—जादू भरे सजोर ॥६॥जगो०॥

*

पद ३

प्रीतम छाँड़ दे अलसई ।
भोर भयो प्रिअ सेज तजहु अब—सिंघासन छवि छई ॥१॥ प्रीतम०॥
उड़गन जोति मलीन, पीन भए—कंज, कली खिलई ।
कोक बिसोक, सुनहु मेरे प्यारे—जिअ की जरनि गई ॥२॥प्रीतम०॥
जागे जग रागे जन तुमरे—कोकिल कूक दई ।
बाल सखा द्वारे सब ठाढ़े—उमगत उमग नई ॥३॥प्रीतम०॥
श्याम जुगुल कीरति कल गावत—बार बार बलि गई ।
उठे जानकी जीवन मृदु हँसि—करुणा उर सरसई ॥४॥प्रीतम॥०

*

मंगला

पद ४

मंगल बदन, शील मंगल मय—मंगल कमल नयन अरुणारे।
मंगल मृदु मुसकान मनोहर—हेरनि मंगल मूल दुलारे ।।१।।
मंगल अधर कपोल नासिका—मंगल श्रवण भृकुटि सुखदारे।
मंगल ग्रीव, कंठ कल मंगल—मंगल कंध सुभुज धनुवारे ।।२।।
मंगल कर सरोज, उर मंगल - मंगल उदर नाभि छवि ढारे।
त्रिबली जंघ जानु मंगल निधि–मंगल पद सरसिज अति प्यारे। ३।।
मंगल अंग अंग भूषित छवि—मंगल जुगुल कृपा उर धारे।
मंगल सिंघासन दोउ राजत—श्याम केलि कल लखि बलिहारे ।।४।।
मंगल बदन, शील मंगल मय—मंगल कमल नयन अरुणारे ।।

*

पद ५

उठे जानकी जीवन प्यारे।
मन्द मन्द गज गति, दोउ हुलसत अलिजन सहित नयन अरुनारे ।।१।।
रंग महल कंचन मनि चौकिन सुधा सरस जल बदन पखारे।
सुचि सुगंध उबटन उबटत सखि - दँतुइन करत जुगुल सुकुमारे ।।२।।
साजे पट भूषन कल अलिअन -काम तड़ित कोटिन घनवारे।
करि आरती निरखि जननिन सुख–कहि न सिरात सेस सुक हारे ।।३।।
सरजू तीर सखन लै गवने हय गज सजि सब जयति उचारे।
मोद लता स्वामिनि सँग बिलसत-अलिजन इत, उत पिअ धनुबारे ।।४।।

*

सखाओं के साथ श्री सरयू स्नान

पद ६

मज्जन करत सखन के संग ।
सानुज लखि हुलसत हुलसावत–श्री सरयू, हिय उठत तरंग ॥१॥
श्री मुख श्री सरजू महिमा कहि–सखन सुनावत पुलकि सुअंग ।
पुनि पुनि मगन होत प्रभु मनहर–जल कल केलि करत बहुरंग ॥२॥
बिहँसत बिहँसावत नट नागर–चलत पगन जल लखि सब दंग ।
कबहुँ नीर महँ प्रविशत प्रगटत–केलि कलाकर कोटि अनंग ॥३॥
जल ते निकसि साज सजि सोहन–अम्बर पीत लसत शुभ अंग ।
भूषण विविधि हरत रवि दामिनि–छवि रस मोद भरे सुउमंग ॥४॥

*

श्रृंगार

स्नानोत्तर की दिव्य छटा

पद ७

आजु सुख साजु रघुराजु छवि निरखिए ।
मज्जन करि सरजु नीर । ठाढ़े तट धीर बीर ।
संग लै सखान भीर । सोहत अति लखिए ॥१॥
सुन्दर जलदाभ गात । आभरनन जगमगात ।
दामिनि परिवारसहित । मोहि मेघ बसिए ।
पीत पट दुकूल चारु । मणिमय बिधि रचि सुढारु ।
पुलकि तड़ित सार बारि । घन सँग रँग रचिए ॥२॥

मन्द मन्द मुसकिरात। मधुर मधुर करत बात।
चितवत "चित-वित" चुरात। सखन पन परखिए।
डारत कर गरनि आपु। बिहँसत हर उरसि तापु।
सकुचि सकुचि नए जात। सखा सुरस छकिए ॥३॥
चिकुर कुटिल बिलुलित अति। जुगुल करनि सुरझावत।
सुखमा सुख सुकवि कहत। बहत आनँद हिए।
अहि जुग गहि जलज सिसुनि। वारत ससि सौंहँ लरनि।
सुधा लाहु सुगम सरन। करुणा रस चखिए ॥४॥
श्रवणन कुँडल सुचारु। कलित केतु मकर मारु।
रूप लखि विमोहि हारि। दीन सरनहि लिए।
नख सिख लखु छवि अनूप। ज्ञान गिरातीत रूप।
विधि हरि हर सुरन भूप। नमत जै उचरिए ॥५॥
छवि सरि जलजात जात। पद उपमा कहि लजात।
लालति जेहि सिअ सिहात। पिअ रुख अनुसरिए।
कामद तरु वर सुजान। मोद रस लता अजान।
प्रगटिए प्यारे! सुबान। चरनन रस भरिए ॥६॥

पद ८

सीतापति राम सोहनिआँ री-सीतापति ॥सीतापति राम०॥
नैन सरोज मार सर वर के-भौंहैं काम कमनिआँ री।
वसी करनि, मोहनि, आकरसनि-सब गुन भरि चितवनिआँ री ॥१॥
कुँचित कच मेंचक कल विलुलित-आवत चन्द ववनिआँ री।
मानहुँ बिधु सन मधुर समर कर-अमिअ लागि सिसु फनिआँ री ॥२॥

सरजू तीर सखान सहित, सखि ! सोहत, पोहत मनिआँ री।
भाल बिसाल तिलक अति झलकत– मानहुँ घन दामिनिआँ री ॥३॥
हेरनि हँसनि, मधुर मृदु बोलनि–तिहरे जाल फँसनिआँ री।
अस कहि मगन भई सो भामिनि–लखि सब होस हिरनिआँ री ॥४॥
कोमल सुधा सरोज करन सों-परसि परसि स्वामिनिआँ री।
मोद लता सिअजू जीवन दिए–जीवन प्रान सजनिआँ री ॥५॥

अभिलाष–सखि प्रति सखि

पद ८

सुखमा सुधा ससि बदन सरसत चख चकोरिनि चख चहैं।
दिन रैन हिअ अभिलाष हुलसति पान नित करती रहैं ॥१॥
वर भाल भृकुटी बंक बिच सुचि तिलक रेख विराजहीं।
जनु मदन तम तकि चाप मरकत जुग कनक सर साजहीं ॥२॥
सखि उभय नव राजीव मनहर मनहुँ विधि बिधु कहँ दिए।
पुनि जुगुल अलि रवि किरन लाए सकुच सब बिसराइए ॥३॥
बिलुलित ललित कच कुटिल मेचक छाइ मुख मंडल रहे।
राकेश महँ लखि जलज जुग अलिगन सुकौतुक सुख लहे ॥४॥
सुक तुंड निंदक नासिका वर चिबुक सुखमा सुख जनी।
मृदु हास चितवनि मोहिनी, सखि ! जगमगत सिर चौतनी ॥५॥
श्रुति सुभग कुंडल लोल परसत अंस अति छवि सोहहीं।
जनु केकि चाहत गहनि जुग अहि छाँहँ निज लखि मोहहीं ॥६॥
वर वदन सोभा सदन सखि लखि नयन नय ना मानहीं।
सुध बुध सकल बिसरानि, प्यारी ! श्याम पिअ जिअ जानहीं ॥७॥

श्री शिव पूजन

पद १०

मज्जन करि सरजु नीर–संग लै सखान भीर
धीर वीर प्रीतम सखि पूजत हर सोहैं।
प्रेम भाव सों सम्हार–पूजि षोड़शोपचार
रिझवत त्रिपुरारि अरी–शंकर मन मोहैं ।।१।।
अति रति आरति उतारि–गावत गुनगन उदार
विनवत कर जोर जोर–सुख रस बरसौं हैं।
घंटा शुभ शंख नाद–बाजन बहु हर विषाद
सुनि सुनि अति मुदित होत-शंकर छवि जोहैं ।।२।।
सखन संग प्रभु उमंग–हर हर हिअ उठि तरंग
शिव सम मम प्रीतम नहिं–कहत चित्त पोहैं।
सुर मुनि गंधर्व नाग–सिद्ध निज सराहिं भाग
शंकर मन सर मराल–दयासिन्धु कोहैं ? ।।३।।
पुरजन परिजन निहोर–सानुज कर जोर जोर
बचन कहत सुधा बोर–शिव धन हमरो हैं।
हमहिं सुबस करन चहै–शंकर की भक्ति गहै
श्याम हर हमार हृदय–हमहुं शिव हिओ हैं ।।४।।

*

श्री शिव पूजनोपरान्त महल पदार्पण

कलेवा

पद ११

हरसि पूजि हर, महल पधारे।
प्रीतम प्रिआ सुभग सिंघासन–सादर सखि जन लै बैठारे ।।१।।
कोटि काम रवि शशि दामिनि लखि–सकुचि लजाइ अपनपौ वारे।
जननी पांव पखारि मोद भरि–अँगुछि कलेवा कल बहु धारे ।।२।।
रुचि रुचि खात जुगुल मनि थारनि–मन्द मन्द सखि व्यजन सँचारे।
शुचि सुगंध पय मधुर सुधा भरि–हेम कटोरनि पिअत दुलारे ।।३।।
अँचै पान बीरी सुखदा दोउ–चावत चाव चोप सुकुमारे।
करि आरति वारति तन मन अलि–मोदलता बलि चँवर सुढारे ।।४।।

श्री युगल सरकार का परस्पर में खेलना

पद १२

खेलत प्रिआ प्रीतम आज।
हेम रतननि रची चौसर–लखत सखिन समाज ।।१।।खेलत०।।
कनक मरकत गोट सोहनि–सकल साज अनूप।
मनिन पाँसे जुगुल ढारत–बदत निज अनुरूप ।।२।।खेलत०।।
हँसत हेरत हिअ सु पोहत निरखि अलि बलि जाहिं।
प्रिआ जू के परत पाँसे–हँसत ताल बजाहिं ।।३।।खेलत०।।
हारि प्रीतम सकुचि दै दै - सखिन कँहँ उपहार।
कहत मधुरे बिजय हमरी–तुम करावनि हार ।।४।।खेलत०।।

प्रिआ जू हारति सुवारति—आपु पिअ परि पाँइँ।
निरखि प्रेम प्रमोद पावन—सखि उमग पुलकाँइँ ॥५॥खेलत०॥
दोउ तिल भर ऊन नहिं—अनुराग तुला तुलाहिं।
सार छवि श्रृंगार रस तनु—एक दुइ दरसाहिं ॥६॥खेलत०॥
जुगुल केलि विनोद मनहर - देखि मातु अनन्द।
रूप सर सरसिज बदन अलि पिअति छवि मकरन्द ॥७॥खेलत०॥
करति आरति गान मंगल बिबिधि बाजन बाज।
बचन गो पर सरस सुख सखि मोद रस भलभ्राज ॥८॥खेलत०॥

राजसभा में सुशोभित श्रीराम

पद १३

राजसभा सुठि सुभग सुहाई।
हेम रतन मय शुचि शुभ आसन–जग मग जग मग जोति जगाई ॥१॥
गुरु वशिष्ठ तापस द्विज मुनिवर–परिजन प्रजा सुहृद समुदाई।
निज निज थल सब आइ बिराजे–सो सुखमा सुख नहिं कहि जाई ॥२॥
सनमुख अनुज सखान सहित प्रभु–राजत कर जोरे सिर नाई।
श्री गुरदेव कहत कल कीरति–कथा अनूप निगम जस गाई ॥३॥
सुरगुरु, सुरप, लोकपति बिधि हर–बिरचि सन्त शुचि भेस बनाई।
सुनि हरि कथा स्वरूप मगन सब–निज निज देह दसा बिसराई ॥४॥
जय जय धुनि छाई तिहुँ लोकनि–सुनि सुनि सखि ! प्रीतम सकुचाई।
हरि जन जस जब कहत महामुनि–सुनत उमग उर तन पुलकाई ॥५॥

लखि प्रभु बान हरसि गुरुवर कहैं-सन्त महा महिमा हुलसाई।
देखि चाव चौगुनो, सराहत-बरसत देव सुमन मन लाई ॥६॥
को साहिब अस शील सरल सुठि-निज जन कँहँ, सखि! देत बड़ाई।
श्याम राम की बान सुहावनि-बार बार लखि लखि बलि जाई ॥७॥

राजभोग की भूमिका

पद १४

जेंवन चलिए आनन्द कन्द।
हौं पठई आई श्री अम्बा-जोवत मग जोवन मुख चन्द ॥१॥
राज भोग समयो शुभ आयो-उमँगि अवध निरभर आनन्द।
सेवक सजग साज सब साजे-नौबत बजत हरन दुख द्वन्द ॥२॥
बदन कमल अलि जन अलि आतुर-प्यासीं सब छवि रस मकरन्द।
उठे जानकी जीवन मृदु हँसि-सानुज सखन सहित स्वच्छन्द ॥३॥
केहरि ठवनि चले प्रभु भवनहिं-गति लखि भइ गति मन्द गयन्द।
भोजन भवन विराज मोद भर-सखा अनुज प्रिअ कोशल चन्द ॥४॥

राजभोग (मध्याह्न)

पद १५

राजभोग को समय सुहायो।
हेम रतन मय निज निज आसन- बैठे सखा अनुज सुख छायो ॥१॥
कनक थार मनि खचित, सुव्यंजन-षट रस चारि भाँति मन भायो।
शुचि सुगंध जल कंचन करवा-परसि सुआरन पद सिर नायो ॥२॥

जेंवत प्रभु मृदु हँसि परसावत-अनुज सखन प्रिय हिअ हुलसायो ।
माँगत सकुचि प्रसाद निहोरत-पावत पुलकि प्रेम अनमायो ॥३॥
उत अलि जन श्री स्वामिनि जेंवत-प्रेम प्रमोद बिनोद सवायो ।
मृदु मुसकाइ लखत प्रीतम कहँ जुगुल सुधा छवि छकि सचु पायो ॥४॥
नभ सुर बरसि सुमन, दुंदुभि धुनि-तीन लोक सुखमा सुख आयो ।
अँचै पान सब पाइ सु गवने-निज निज भवन मोद रस मायो । ५॥

राज्ञ भोग के पश्चात

पद १६

मन मोहन प्रिअ महल पधारे ।
चलौ सखी यूथेश्वरि बोलत-जुगुल अबहि महलन पग धारे ॥१॥
सेवा समय सजग सब सखि गन-व्यजन चँवर सजि छत्र सुधारे ।
कोउ ताम्बूल सुगंधि सजावति-पीक दान कोउ लै सुख सारे ॥२॥
सेवति सावधान अलिजन दोउ बदन सरोजनि तन मन वारे ।
सुभग सेज रचि सुमन मनोहर-लसत जुगुल अतुलित छवि वारे ॥३॥
करि विश्राम विराजत दोऊ-सुभग सिंहासन कहत न पारे ।
क्रीड़त ललित केलि रचि चौसर-तास सुरुचि सतरंज दुलारे ॥४॥
बिहँसति लसति, सु हुलसति सखिगन-जनु चकोरि बिधु लखि तन वारे ।
मन्द मन्द मुसकात हरत हिअ-जुगुल कृपा दृग कोर निहारे ॥५॥
हारत बिजय मान निज प्रीतम-नमत प्रिआ तन चख अनिआरे ।
प्रिआ हार पहिराइ हार कल-प्रीतम लै सोइ तिन गर डारे ॥६॥
बलि बलि जात दोऊ दोउन पै-बहत मोद रस प्रेम पनारे ।
यह सुख अगम अनूप अमित अति-पाइ सु अलि जन तन सुधि टारे ॥७॥

उत्थापन

सखि-सखि से

पद १७

श्री सीतापति राम सोहनिआँ।
राजिव नयन अयन करुणा सखि–छवि पर वारौं कोटि मदनिआँ ॥१॥
हँसनि जिते बिधुकर, मुख बिधु कँहँ-कीर तुंड नासा मद हनिआँ।
चिक्कन मधुर कपोल गोल कल–अधर बिम्ब बन्धूक लजनिआँ ॥२॥
रदन कीन रद मद दाड़िम कर–अरुन प्रभा रंजित दामिनिआँ।
श्रवणन केतु मार के जुग जनु–मकर केलि कर सुधा सरनिआँ ॥३॥
भाल बिसाल चारु सखि ! झलकत-तिलक रेख दुइ सर मन जनिआँ।
कच मेचक अलि सिसुगन धावत–लेन सुधा रस चन्द बदनिआँ ॥४॥
कर सरोज धनु बान धारि सखि–हँसि हँसि करत सुबस कामिनिआँ।
नख सिख नीक साजि पट भूषण–जुगुल कृपालु निधन के धनिआँ ॥५॥
नभ बाटिका निरस नहिं भूलत–अलि जन पद सरसिज रस सनिआँ।
मोद लता प्रभु पग रज जाँचति–करुनाकर सुजान सिर मनिआँ ॥६॥

राज्य-सिंहासनासीन

पद १८

राजत राज समाज आज दोउ—सहस सेस सुख कहि न सिराई।
सखा अनुज प्रिय सचिव विप्र गुरु–सोहत सब निज निज थल आई ।१॥
सिंहासन अति दिव्य मनोहर—तेज पुंज मणि मय छवि छाई।
कोटि तड़ित रवि शशि लखि लाजत तँहँ आसीन जुगुल सचु पाई ॥२॥

लखन लाल दाहिन दिसि राजत–वाम भरत भ्राजत सिवकाई।
पाछे शत्रुशाल अति सोहैं–[1]सौंहें पवन तनय हुलसाई ॥३॥
ब्रह्मादिक सुर साजि मनुज वपु–निगम करत स्तुति सिर नाई।
नभ बरसत सुरतरु सुर सुमननि–निरतति देव बधू गुन गाई ॥४॥
निरभर प्रेम प्रमोद जलधि अति–उमगत लखि जुग शशि सुखदाई।
सावधान दोउ सबहिं आदरहिं–पै दीनन पै रति अधिकाई ॥५॥
रिधि सिधि सुख सम्पति सब, सजनी ! सिमिटि २ आईं यहि ठाईं ।
सेवहिं जुगुल सनेह मोद रस–बार बार निज भाग सिहाहीं ॥६॥
दीन दयालु दिपत दोउ दिन दिन–बान पतित पावन प्रभुताई।
श्याम स्वान रुख राखि, किए यति मठपति गज की पीठ चढ़ाई ॥७॥

मृगया-करुणा

पद १६

आज प्रभु मृगया केलि रचाए।
वय वपु वरन रूप गति सोहनि—लखि रवि हय मद नाए ॥१॥
अनुज सखा सँग प्रीतम, सजनी ! चढ़ि चढ़ि बाजि सिधाए।
भूर भीर भर गगन विमानन—सुरन सुमन झरि लाए ॥२॥
सोहत विपिन साजि सुख सुखमा—लखि लखि हिअ हुलसाए।
तरु वर लता ललित मन मोहत—जनु रति काम सुहाए ॥३॥
शिव बिरंचि निज निज बाहन, सखि ! पेखन पेखन आए।
प्रीतम रूप माधुरी निरखत—मृग तन सुधि बिसराए ॥४॥

---

[1]सौंहें=सामने

मोचत नहीं बान धनु धारे—सोचत प्रभु सचु पाए।
करुणाकर कह अनुज सखन सों—"हम इन हाथ बिकाए ।।५।।
मृगया जोग न ए मृग नेही"—उतरि तुरँग महि आए।
हिए लाइ चुचुकार सबन कहँ—हँसि हँसि प्रभु दुलराए ।।६।।
यहि बिधि कृपासिन्धु सुख सिरजत—बिहँसत भवनै आए।
लखि जननी, सुनि चरित मनोरम—नैन नेह जल छाए ।।७।।
श्याम सखा जन अनुज सराहत प्रेम पुलकि उमगाए।
खूब खूब कल कीरति प्रभु की—निगमागम नित गाए ।।८।।

उपवन की शोभा

पद २०

आजु बन मँगल मोद भरो।
फूलत, फलत, पल्लवित नित नव—तरु सुर तरु निदरो ।। १।।
बिहरत प्रान प्रिआ प्रीतम जहँ -प्रेम मगन हिअरो।
पुलकित अंग रंग रस घोरत—कानन परत झरो ।।२।।
ललित लतान बितान तानि मनु -मनसिज निलय करो।
निरखि निरखि छवि जुगुल जात बलि–लाजनि रहत दुरो ।।३।।
सरनि सरोज मंजु अलि गुंजत—कलरव खग उचरो।
शीतल मन्द सुरभि बह मारुत—सेवा सुख सँचरो ।।४।।
सुरगन बिरचि रूप खग मृग अलि–बन बसि प्रभुहि बरो।
सहस सेष सुख कहि न पार लहि—श्याम कहा बपुरो ।।५।।

उपवन-विहार

पद २१

परम दिव्य जलजात बिशद बर। सहस सुदल राजत अति सुन्दर ॥१॥
तापर भव्य सिंहासन राजै। दम दम दम दमकत छवि छाजै ॥२॥
कोटि तड़ित रवि शशि लखि लाजत। सुख आसीन तहाँ दोउ राजत ॥३॥
सुरतरु तर सुखमा सुख सोहनि। बर बितान मनिमय हिअ पोहनि ॥४॥
खग मृग अलि सुर बिरचि सुवेषा। कूंज गूंज मन हरत बिशेषा ॥५॥
सर सुठि सुभग सरोज सुसोहैं। नाचत नभ सुर बधू विमोहैं ॥६॥
जै जै धुनि छाई सब ओरैं। लखि सखि जन पुनि पुनि तृन तोरैं ॥७॥
प्रीतम प्रिआ दिए गल बाहीं। अरस परस मृदु हँसि पुलकाहीं ॥८॥
अलि गन सावधान सब सेवहिं। जुगुल प्रेम सरि तरनी खेवहिं ॥९॥
त्रिविधि बयारि बहति मन मोहनि। बारति रति तन मन लगि गोहनि।१०
तरु वर पात पात रस बरसहिं। मोद लता लहि सुख हिअ हरसहिं ॥११॥

पद २२

बिलसत जुगुल छवि अवगाहि।
कनक मनि मय रुचिर आसन—सुखद तरुवर छाँहि ॥१॥
त्रिविध बहति बयारि मनहर—पूर प्रेम प्रमोद।
मधुर गरजत मन्द मन्द, फुहार झर अम्भोद ॥२॥
सरनि बिकसे कंज मंजुल—गुंज कल अलि वृन्द।
केकि, पिक, सुक, हंस, चातक-नटत, रटत सुछन्द ॥३॥

नभ विमानन भीर सोहन्ति—सुमन सुर बरसाहिं।
नृत्य कला प्रवीन निरतति—सुर बधूटि सिहाहिं ॥४॥
लोक सुख सुखमा सिमिटि सब-कौन कानन धाम।
बिरचि खग मृग रूप बिधि हरि-शम्भु लहि विश्राम ॥५॥
प्रिया प्रीतम निरखि सुखमा—परसपर मुसकाहिं।
दोऊ, दोउन छवि सुसागर-मगन बलि बलि जाहिं ॥६॥
हँसनि हेरनि मधुर बोलनि-हाव भाव समाहिं।
श्याम अलि जन मोद रस लहि-तनु सुरत बिसराहिं ॥७॥

पद २३

बिहरत युगुल उपबन माँहि।
सितासित दामिनि उभय जनु—दमकि दुरि दुरि जाँहि ॥१॥बिहरत०॥
सघन तरु वर बलित बेलनि—सुखद कुंजनि छाँहि।
हँसनि, हेरनि, मधुर बोलनि—प्रेम रस सरसाँहि ॥२॥बिहरत०॥
सरस सर शृंगार सुख जलजात-अति बिकसाँहि।
अलि, सुअलिजन मंजु गुंजति—छवि मरन्द छकाँहि ॥३॥बिहरत०॥
केकि कीर सुकोकि कोकिल—रटति नटति सुहाँहि।
बिरचि खग मृग रूप सुरमुनि—पुलकि लखि बलि जाँहि ॥४॥बिहरत०।
लोक सुखमा सुख सिमिटि सब-सफल हित इत आँहि।
मोद रस लहि भाग पूरन—पूरि प्रेम अघाँहि ॥५॥ बिहरत०॥



जल विहार

सखि-सखि प्रति

पद २४

जल केलि कल समर की—कैसी बहार प्यारी।
प्रीतम प्रिआ कलाकर - दोउ धीर बीर भारी ॥१॥
छिटकैं दोऊ परस्पर—शुचि वारि बिधु बदन पर।
जनु चन्द जुग सुधा की—धारा ललित सुधारी ॥२॥
प्रगटैं कबहुं दुरैं री—जल धार माँझ बिहरैं।
सखि गन हहरि पुकारैं—प्रगटैं उभय खिलारी ॥३॥
जुग कंज लखि ललकि कै—अलि जन सुधाइ आईं।
पिअ एक उत, इतै बहु—बिहँसे अवध बिहारी ॥४॥
प्रगटे अनेक रूपनि—कल केलि अलि छकाईं।
सरजू सु मज्जि साजे - भूषण बसन सँवारी ॥५॥
रस मोद यह अनूपम—लखि मुक्ति सुध बिसारी।
लोटैं सु रज अवध में—सुर गन जयति उचारी ॥६॥

सखि-सखि प्रति (नाम-महिमा)

पद २५

आजु सखि-केवट आप भए।
जस नाविक मोहन, तस नैआ-मोहिनि डारि दए ॥१॥आजु०॥
बिरचित मार, साज सजि सोहनि-रति मद माथ नए।
स्वामिनि संग चढ़ीं सब तरनी-जल बिहार रचए ॥२॥आजु०॥

केवट रुख लखि नाउ चढ़ौनी–दीने सबनि हिए।
खेवन लगे ललित कर कंजनि–छवि निधि छवि छजए ॥३॥आजु०॥
सरजू बीच नवँआ डगमगि–सावन घन उनए।
गरजि तरजि दामिनि दमकावत–पवन सजोर बहैं ॥४॥आजु०॥
कौतुक–केलि कलाकर कौतुकि–हँस अस बचन कहैं।
हम अजान यहि कार नयो सखि ! डूबत अब सब ए ॥५॥आजु०॥
तुम कोउ चतुर सुजान होउ तौ–नैआ खेवत ए।
अस कहि मौन मारि हरि बैठे–सबै चकित चित ए॥६॥आजु०॥
भरि रस मोद एक उठि बोली–प्रीतम नाम लए।
भव निधि पार होत सब पल महँ–सन्तन मुख सुनए ।७॥आजु०॥
श्याम खूब कल कीरति गावहिं–सब मिलि हिअ उमए।
प्रीतम प्रिआ नाम नैंआ किए–पार सु नाद छए ॥८॥आजु०॥

सखि–सखि प्रति (नाम–महात्म)

पद २६

सुनिअत सागर सेतु बँधायो।
प्रीतम नाम प्रताप सुनत रहीं–आजु प्रगट देखन महँ आयो ॥१॥
मँझ धारनि महँ परि गई नैआ–बरसा घोर पवन बिचलायो।
नाम प्रिआ प्रीतम कर, सजनी !–सपद सबनि के प्रान बचायो ॥२॥
कपि नल नील रहे मिस आली–सिलनि समुद तरंग बहायो।
लिखि लिखि प्रीतम नाम सुआखर–सेतु भयो जग कीरति गायो ॥३॥
घर घर अलि जन नाम महात्तम–अवधपुरी बिचि सबहि सुनायो।
श्याम नाम करनी कल लोकनि–छाइ रही सुनि हिअ उमगायो ॥४॥

सन्ध्या

(श्री युगुल सुशोभित) सखि प्रति सखि

पद २७

राजत जुगुल किसोर आज री।

नख सिख अंग अंग शुभ सोहन–दिव्य भव्य भूषण सु भ्राज री ॥१॥

नील पीत पट दिपत, नमत अति–घन दामिनि रवि शशि समाज री।

दुरत दुरित, रति अमित मदन छवि-लखि सकुचत दबि दबि दराज री। २॥

सिंघासन मनि रतन मनोहर–बिधि बुधि चकित चितइ सु साज री।

सुख आसीन दोउ तहँ बिलसत-छवि सिंगार छकि छटा छाज री ॥३॥

सेवा सावधान सब सहचरि–नभ सुर मुनि जय जयति गाज री।

उमा रमा शारदा सराहत-अलि जन भाग सुहाग साज री ॥४॥

श्याम राम कीरति नव प्रगटत–दिपत जुगुल दुखिअन के काज री।

मोद लता माया हिम मारी-अपनाए की राखि लाज री ॥५॥

भोग (ब्यारू)

पद २८

ब्यारू करत सखन के संग।

सानुज मन मोहन अति सोहन–उत स्वामिनि अलिगन स उमंग ॥१॥

चारु चारि बिधि सरस सलोने-षट रस सुधा सुस्वादित ढंग।

हेरनि हँसनि, मधुर बतरावनि–चोरत चित घोरत रस रंग ॥२॥

सेवक व्यजन चँवर सुख ढारत–वारत मन पुलकित सब अंग।

बिधि हर सुरगन बिरचि रूप जन–सेवहिं प्रभु पद, प्रेम अभंग ॥३॥

सानुराग दृग कोरनि निरखत जुगुल परस्पर होत सु दंग।

अँचै पान पाए सुख साजे-श्याम सु लजवत कोटि अनंग ॥४॥

अलिजन सेवा

श्री युगुल नित्य विहार

पद २९

राजत जुगुल किशोर हरत मन ।
सिंघासन छवि धाम तेज मय-सुख आसीन मुदित पुलकित तन ।।१।।
छत्र व्यजन कोउ चंवर सुधारत-नाना विधि सेवति प्रिअ अलि जन ।
मंगल मोद उछाह सुधा सरि मज्जत सखि, सिहाति तिअ सुर गन।।२।।
नाना केलि बिलास गान कल-नृत्य साज सजि सब सुख भाजन ।
रम्भादिक गंधर्ब लाज बस-निरखि सु नमत सिहात जयति भन ।।३।।
मोद लता बाजी लगि बांकी-झुकि, झांकी झांकी सखि प्रिअ तन ।
मृदु मुसकाइ जनाइ सैन दै-भई सैन बिरिआं अब सुख घन ।।४।।

अलिजन केलि छद्म लीला

नव सहचरि रस मोदलता (नर्त्तकी बनकर आई)
नृत्य कर अपना पता गुप्त रीति से देती है

पद ३० (सवैया)

लपटी बिटपै सहि सीतरु घाम-भरी रस मोद जताइ पता ।
निसि बासर नाच नचाइ घनो-अब आइ इतै करु माफ खता ।
प्रभु ! नाचन चाय नचाइ करो-अति ढीठ भई नाचइ बल ता ।
हंउं चेरि सिआजू की बिन मोल-सु कौन कहाँ ते आइ बता ।।१।।
दोहा० प्रभु—मोद लता तव नाम है-सरस सुभावनि मोर ।
प्यारी जू संग आगमन—भयो सुहावन तोर ।।१।।

श्री चारुशिला जी-गूजरी वेष (१)

पद ३१ (सवैया)

वर[1] गिरि[2] पै जँहँ महराज विराज सहित मिथिलेस लली रसिआ।
खल बासव पूत करी खलता, बल लखि अति भीति भयो बसिआ।
हौं लाइ दही पिअ सैन दही लै क्यों न ? दही रति पति डसिआ।
चख चाख दही, चख मार कही, प्रिअ चारु शिला उ अमित हँसिआ॥

श्री चन्द्रकला जू फल बेचने वाली बन आई (२)

पद ३२

रुचिर[3] अयुत[4] शशि[5] सह फल लाई।
सुफल करिअ सुन्दर फल खाई॥१॥
रस गृह जा मन लोचि सुहाई।
केला अनुपम रस सरसाई॥२॥
बिबिधि फलनि किमि नाँउँ गनाऊँ।
पिअ दै फल जीवन फल पाऊँ॥३॥
फल चख चाहि रसिक हँसि बोले।
चंद्रकला जु भई मुख तोले॥४॥

---

[1]वर=चारु [2]गिरि पै=शिला—चारु शिला
[3]रुचिर=कल [4]अयुत= अकार सहित [5] शशि=चन्द्र-चन्द्रकला

श्री कमला सखी-मालिन-रूप (३)

पद ३३ (सवैया)

जल जा धरि मालिनि रूप तबै— मणि कंचन की कर लै थरिआँ।
हँसि आइ गई रसिकेश ढिगै—रहि पूर सुबास सुमन कलिआँ।
लै लै सुमनहिं अब लेत नहीं – सुमनहिं, सुमनहिं मुसकात पिआ।
निरखहिं जल जात अकार युतं—तव नाम सुनागरि जान लिआ ॥१॥

श्री प्रसाद जू सखि (४)

श्री रंग जू को प्रसाद लै पुजारिन रूप में

पद ३४ (कवित्त)

कंचन कटोरिन सु रंग रस बोरिन पिअ,
चन्द मुख चकोरिन प्रसाद रंग लाइ हौं।
अति ही सु पावन सुमति हुलसावन ए,
पाइ के पवाइए असंक बलि जाइ हौं।
साँची कहौं लालन पती जिए पतीजिए जू,
लीजिए जू लीजिए चरन सीस नाइ हौं।
लावो जू लावौ जू प्रसाद जू प्रसाद बेग,
मेलि मुख ललकि न एतो स्वाद पाइ हौं॥

श्री मदन कला जू-गंधनी रूप (५)

पद ३५ (कवित्त)

व्यापी नहिं नारद भले ही पाइ पिअ रुख—
बहुरि नचायो ताहि नीके करि जानिए।

सोई प्रभु चेरी तव लाई अतरन ढेर
जुही खस मोतिआ गुलाब सुख सानिएँ।
हा हा बलि हा हा बलि देखहुँ लगाइ पट
फेर नाथ लीजिए कि फेर फार ठानिएँ।
मदन कल आसहेत देहु मद छाँड़ि-
देहु देहु इतराहि न इतर प्रमानिएँ ॥१॥

श्री विमला जू वीरी लै आई (तमोलिन रूप) (६)

पद ३६

विमल अयुत जस सारद सेसा।
बरनत पार न पावत लेसा ॥१॥
हौं बीरन बीरी लै आई।
अमित अमल अनुपम छवि छाई ॥२॥
महक महक अति लहकत रूरी।
गुन गुमान मानिन छवि तूरी ॥३॥
सारी कनक रही तनु छाही।
झलकत लवँग दीठि लग नाहीं ॥४॥
लेहु लेहु पिअ लहि अपनावहु।
श्री किशोरि जू भय जनि लावहु ॥५॥
हँसि पिअ कही केलि रस सरसत।
विमला प्रीति सुधा जनु बरसत ॥६॥

श्री हेमा जू मिठाई-मेवा लाईं (हलवाइन रूप) (७)

पद ३७

कंचन[1] अयुत[2] थार भरि लाई।

बहु मेवा पकवान मिठाई ॥१॥

नाना बिधि अनुपम रस सानी।

लीजै पिअ जेती मन मानी ॥२॥

सुघर उदार चतुर तुम प्यारे।

फेर फार जनि करहु दुलारे ॥३॥

हौं बलि कछु लीने ही बनिहै।

कनक[1] आस[2] हँस कहि धन धनि है ॥४॥

श्री छेमा सखी युक्ति पूर्वक निज उपचार कराने आईं (रोगिनी रूप) (८)

पद ३८

क्षेम आस[3] तुमरे ढिग आई।

पिआ होहु अब बेग सहाई ॥१॥

तनु बहु घाव रुधिर भरि सारी।

आपु नैन सर तकि तकि मारी ॥२॥

मरन चहति अब बिलम न कीजै।

प्रीतम परसि गात रखि लीजै ॥३॥

क्षेम क्षेम अस[4] पीउ पुकारी।

तुम तौ मम प्रानन ते प्यारी ॥४॥

---

[1] हेम } हेमा
[2] अ सहित }

[3] अ सहित

[4] अ सहित

श्री पद्म गंधा जू–जौहिरिनि रूप में (९)

पद ३९

जलज गंध अस आव सलोनी।
पिअ मधुकर रस रूप ठगौनी ॥१॥
नाना मनि मानिक अरु हीरन।
मुकता गन लीजै प्रिअ बीरन ॥२॥
तुम रघुवंश तिलक वर गाहक।
अनत जाउँ कहँ तजि अस नायक ॥३॥
कमल बास अस बिहँसि कही पिअ।
तेरो बास सदा मेरे हिअ ॥४॥

श्री सुभगाजू–सुनारिन रूप में (१०)

पद ४०

सुभग सुभग अस[१] काहु न लेखो।
बनी सुनारि सुनारि बिसेखो ॥१॥
नाना मनि भूषण वर लाई।
पहिरिअ पहिराइअ मन भाई ॥२॥
नख सिख साज सजहु प्रिअ सुन्दर।
बोलु बेग बलि सुख सुखमाकर ॥३॥
सुभग आस[२] हँसि कही बिहारी।
चीन्ह लीन हम उर विच धारी ॥४॥

---

[१] अ सहित [२] अ सहित

श्री सुलोचना जू वस्त्र लाई-वच्चाब्विनि रूप (११)

पद ४१

सुचख आस रस रूप सुमाती।
लाई पट कल अगनित जाती॥१॥
जरी मखमली वर किमखावी।
लाल हरे बैंजनी गुलाबी॥२॥
अमित रंग बहु जात अपारे।
लीजै पट मन मानहि प्यारे॥३॥
हँसि कहि पिअ गहि पट मन लीजै।
फेर न फार सुनैना कीजै॥४॥

श्री वरारोह जू-नाइनि रूप (१२)

पद ४२

[१]पिअ! [२]आस [३]रो हू में इक तेरो।
कृपा विलोकनि सोच निवेरो॥१॥
हौं मारी धाई चलि आई।
कीजै कृपा चेरि चित लाई॥२॥
नाइँन पिअ मोसी कोउ नाँइन।
अंग अंग उबटनहि लगाइन॥३॥
बहु सुगंध मर्दन सुख मज्जन।
होइ रजाइ करहुँ मन रंजन॥४॥
वर असरो हम तुमहि सु चीन्हों।
नाइँन तव समान रस भीनो॥५॥

---

[१]पिअ=वर [२]आस=अ सहित [३]=वरारोह

श्री लक्ष्मणा जू–गंधर्वणी रूप (१३)

पद ४३

शशि[1] पँहँ पंच अकाश[2] धरीजै।
गजरिपु[3] दिग[4] चौगुन[5] करि लीजै ॥१॥
अस[6] मम नाँउँ पिआ गुन गाऊँ।
मधुरी मधुरी बीन बजाऊँ ॥२॥
ताल मूर्छना गति सुर सारे।
प्रिअहि रिझावन-पन उर धारे ॥३॥
प्रनत पाल पूरहु पन प्यारे !
लक्ष्मण अस[7] बसि हृदय हमारे ॥४॥

श्री विश्व मोहिनी जू–शृंगारिका रूप (१४)

पद ४४

प्रभु माया गुन नाँउँ धराऊँ।
सज बज पिअ सिंगार कराऊँ ॥१॥
सुन्दर श्याम सलोने लालन।
होहि रजाइ सजहुँ सिंगारन ॥२॥

---

[1]शशि = १ } १ पर पाँच शून्य = लक्ष
[2]पंच अकाश = पाँच शून्य ००००० }
[3]गज रिपु = सेर
[4]दिग = } दस × ४ } ४० सेर = मन
[5]चौगुन = } = ४० }
[6]अस = अ सहित = लक्षमना
[7]अस = अ सहित

नख सिख जुगुल रूप भल साजौं।
परसि परसि पग अहमित गाजौं ॥३॥
हँसि कहि जग मोहनि मैं जानत।
करहु सुहाइ जौन उर आनत ॥४॥

श्री चम्पकला जू-भाटिन रूप (१५)

सोरठा- *चंसु पभा कटि लान—आदि बरन पिअ ! नाँउ मम।
अन्त बनी हौं मान—जै जै जै रघुवंश मणि ॥१॥

पद ४५ (कवित्त)

सज्जन कुसीलता–सुसीलता असज्जन में
बाँझनि प्रसूत पीर, दया दुष्ट जन में।
सन्तन निठुराई, मृदुताई असन्तन में
सुधा माँहि मीच, अघ बाढ़न भजन में।
भानु सीतलाई अरु उष्णताई शशि हू में
कामिहि विवेक रस क्रोधिहि वचन में।
एते जो होवहि तौ होहि भले, राघव पै
दास दोस सुरति नहि देखी कहूँ मन में ॥१॥

---

* पहले अक्षर से—चंपकला—नाम परिचय
अन्तिम अक्षर से -सुभाटिन—बेष परिचय

पद ४६

जयति जय राज राजेन्द्र राजिव नैन
रजनिचर विमुख तम रवि प्रचंडम्।
जयति प्रिअ देव मुनि नाग जन कोक नद
जयति सखि जन कोकि वर अखंडम्।
जयति श्री कौशला अदिति उर गृह प्रगट
खलन अति ताप त्रासक सु दंडम्।
हेरि हँसि बैन मृदु कही प्रिअ चंपकल
आस मम दासि वर उर सु मंडम्॥

श्री रूप कळा जू शस्त्र बेचने वाली बन के आईं (१६)

पद ४७

रूप रुचिर अस सुनी न देखी।
लखि पिअ रही चित्र अवरेखी ॥१॥
धनु सर असि बरछी बर लाई।
विविधि अस्त्र अनुपम छवि छाई ॥२॥
कैसन कही लेहु प्रिअ एहू।
ए कुंठित लाजहिं गुन गेहू ॥३॥
भृकुटि बंक, धनु निरखि सिहाई।
नैन, पैन सर लखि सकुचाई ॥४॥
चितवनि असि बरछी ते तीखी।
लागति ही सालति हिअ नीकी ॥५॥
हँसि कहि रूप सुभग अस हेरी।
निरखि नैन मिस बसहि किए री ॥६॥

(इति षोडस सहचरि रस-विनोद लीला)

अलिजन सेवा शयन समय

पद ४८

राजत केलि कलाकर मनहर।
नाना केलि बिनोद हास कल-सखिअन सँग पिअ करत सुखाकर ॥१॥
नाना छद्म बनाइ सु अलि जन-पिअहिं रिझाइ जात बलि ता पर।
प्रीतम हँसत चोर चित चेरिनि-उघटत नाम सु चोरि प्रगट कर ॥२॥
सुनि सुनि अलि मुसकात, जानमनि-प्रिआ सहित रस मोद प्रेम भर।
वारत तन हारत हिअ पिअ सों-बरबस परत पगन पद्मन तर ॥३॥
नित नित नव लीला रचि दोऊ-देत अमित सुख सहचरि सुन्दर।
श्याम सैन बिरिआं लखि सखि गन- लागीं साज सजन छवि सुख ढर ॥४॥

शयन

सखि वचन-श्रीप्रभु-प्रति

पद ४६

प्रीतम ! तुम जीते हम हारे।
आओ पिअरवा नैननि, नैननि—मम उर भवन दुलारे ॥१॥प्रीतम०॥
प्रीति-पलँग सज साजनि साजन ! पौढ़ो प्रान अधारे।
कोमल कंज, कलित मृदु मंजुल—चापौं चरन तुमारे ॥२॥प्रीतम०॥
छमा दया दासी तँहँ राखौं—रखवारिनि रुचि, प्यारे!
चारु चँवर चित चाव चोप चुप मन्द मन्द मति ढारे ॥३॥प्रीतम०॥
सैन श्याम सुख सरस करहु पिअ-यह अभिलाष हमारे।
खूब खूब कल कीरति गावौं-निसि दिन साँझ सकारे ॥४॥प्रीतम०॥

पद ५०

विलसत जुगुल छवि मद मात ।
सुमन सेज सुसाजि सखिअन-निरखि रति बलि जात ॥१॥विलसत०॥
दोऊ सुख आसीन तनु धरि-छवि सिंगार सुहात ।
परस्पर बोलनि बिलोकनि हँसनि हिअ हुलसात ॥२॥विलसत०॥
नयन सरसिज झपकि झपकत-नींद बस जमुहात ।
शयन गृह सुख अयन परदा-परे मनहिं लुभात ॥३॥विलसत०॥
अतुल छवि मति तुला तौलत हारि हिअ न तुलात ।
मोद रस अनुपम सु लहि अलि भूरि भाग सिहात ॥४॥विलसत०॥



॥ इति श्री युगुल माधुरी बिलास ॥

॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

  

जय जय जय जय जय जय

पद ५१

जय कृपा सिन्धु उदार
　　करुणा सील गुनगन सागरं।
पद कंज रज सुभ परसि मुनि तिअ
　　सुगति प्रद —सुखमालयं ॥१॥
भव चाप भंजि, त्रिताप गंजन
　　भयद भव भय खंडनं।
श्री जनक जा विधु-मुख चकोरं
　　जयति मिथिला मंडनं ॥२॥
जय जयति जय श्री जुगुल छवि निधि
　　निरखि अलि जन मन मगन।
तृन तोरि बलि बलि जाहिं
　　जय जय भनत बर बरसत सुमन ॥३॥
जै दामिनी घनश्याम लखि
　　हुलसैं मयूरी मातु सब।
श्री अवध घर घर केलि कल
　　कीरत्ति विमल नगरी अजब ॥४॥

पर्व

उत्सव

नव संवत

पद ५२

दिन दिन बिरद बाँकुरो बाढ़ौ।
दीन दयाल दीन दुखिअन कँहँ
दुख सागर ते काढ़ौ।
बाँह गहे की लाज सुराखौ
गहि पुनि कबहुँ न छाँड़ौ ॥१॥दिन०॥
दानि शिरोमनि जुगुल जग भगत
दर पर भिच्छुक ठाढ़ौ।
चरन कमल मकरन्द श्याम अलि
पान करावहु गाढ़ौ ॥२॥दिन०॥
संवत् नयो नयो यह अघिमा
नयो बिरद रस झाड़ौ।
खूब खूब कल कीरति माचै
रघुकुल जस महि माड़ौ ॥३॥दिन०॥



श्री राम नवमी

पद ५३

नौमि नौमि नौमी सुख आकर। मधुर मास मधु लोक उजागर।
धन्य भूमि सुत भौम वार बर। मध्य दिवस धन धन्य भागभर।
चक्रवर्ति दशरथ अँगनाई। प्रगटे प्रभु जै जै धुनि छाई।
हर्षवन्त जग जीव चराचर। नौमि नौमि नौमी सुख आकर ॥१॥
जै जै श्री कौशल्या अम्बा। विधि हरि हर पूजित जगदम्बा।
तासु कोख पूजहिं सुर बामा। जनमें जहाँ लोक अभिरामा।
अवधपुरी तिहुँ पुर मनि राजै। बलि बैकुण्ठ निरखि जेहि लाजै।
सो सुख मन वच बुद्धि अगोचर। नौमि नौमि नौमी सुख आकर ॥२॥
शिव ब्रह्मा सुर जयति उचारें। लोटत भूमि सीस रज धारें।
तीन लोक सुखमा श्री संपति। बटुरि बटुरि आई पुर हरषति।
गान निसान कोलाहल भारी। निरतत सबै पुलकि नर नारी।
शारद शेष गुनत गुन गन वर। नौमि नौमि नौमी सुख आकर ॥३॥
अवध पयोधि उमग उमगायो। पय पयोधि लखि सीस नवायो।
को बरनै ? कवि मति सकुचाई। अग जग नाथ रमें जँहँ आई।
डारि मोहिनी खूब रिझाए। अवध नाथ तुव हाथ बिकाए।
श्याम खूब कीरति कल मनहर। नौमि नौमि नौमी सुख आकर ॥४॥

——

अक्षय तृतीया वैसाख शुक्ला ३

पद ५४

सखि ! श्री जुगुल रूप निहारु ।
मदन, रवि सुत, सोम निरखत—नमत होत लजारु ।।१।।
कोटि घन दामिनि, सुमरकत—कुलिस मानत हारु ।
अंग अंग सुसाजि भूषण—बसन निज अनुहारु ।।२।।
पगन नुपुर मनि, हरन मन—मुखर मधुर सुचारु ।
सोहनी सोहति महाउर—गिरा गौरि सवाँरु ।।३।।
जलज, धुज, अकुंस प्रमुख सुभ, चिह्न उदित उदारु ।
बदन सुखमा अयन छवि जल—पूर सिन्धु अपारु ।।४।।
रतन हाटक मुकुट जगमग—चन्द्रिका सुख सारु ।
अमिअ चितवनि, नैन करुणा—दान, दानि उदारु ।।५।।
अछै दिन, आछै अछत, छै—रिपु छरनि छरि छारु ।
हँसत हेरत श्याम पतितन—जुगुल कल सरकारु ।।६।।

पद ५५

माधव मास पुनीत पाख सित—तीजैं सुभग सुहावनि राजैं ।
प्रीतम प्रिआ बिराजत दोऊ—सुठि सुन्दर सुखमा सुख साजैं ।।१।।
सिंहासन अति दिव्य मनोहर—रवि शत कोटि दामिनी लाजैं ।
सेवत सावधान सहचरि सब—नभ अरु नगर सु बाजन बाजैं ।।२।।
उमा रमा शारद लखि ललकति-अलि जन भाग सिहात समाजैं ।
बिधि हरि हर द्वारे सुर ठाढ़े—नमत जयति जय कल रव गाजैं ।।३।।

विरंचि नारि वर वेष सकल सुर-प्रभु रजाइ लहि मोद दराजैं।
भीतर महल जाइ छकि माँगत—अबिरल प्रेम जुगुल हिअ भ्राजैं ।।४।।
खूब खूब कीरति कल गावहिं—तीनहुँ लोक छलकि छवि छाजैं।
श्याम मोद भर देत चराचर—जानत अछय तीज प्रभु आजैं ।।५।।

प्रभु से प्रार्थना

दोहा—अखय तीज की भीख मोंहिं, प्रीतम ! देहु रजाइ।
तन से, मन से, बचन से, श्याम लेहु अपनाइ ।।

प्रभु की स्वीकृति

दोहा—दिन दिन दूनो सुख सजै कृपा हुलसि हुलसाइ।
प्यारे ! चिन्ता न करो करिहौं सदा सहाइ ।।

श्री जानकी नवमी (वैसाख शुक्ला ९)

पद ५६

मिथिला मिसि आलि आज—जग के भाग जागे।
सोच पोच संकट अघ—भूरि भभरि भागे ।।१।।
सुकृत सुजस सुखमा सुख—सिमिटि सरस रागे।
आए मिथिलेस सदन—प्रेम पाग पागे ।।२।।
बिधि हरि हर नारि वेष—सुरपति सुर सारे।
मंगल सजि कनक थार—गावत नृप द्वारे ।।३।।
अलिजन पग परत; जात—भीतर रनि वासैं।
उमा रमा शारद लखि—प्रमुदित करि हासैं ।।४।।
भुक्ति मुक्ति द्वार ठाढ़ि—भक्ति भाग हेरैं।
निरतति कल गान करति—रज लै सिर फेरैं ।।५।।

अमित कोटि ब्रह्म अंड—स्वामिनि सुखदाइनि।
अग जग पति प्रान प्रिआ—प्रगटीं ठकुराइनि ॥६॥
माधव सित नौमि नीक—नभ बिमान भूरी।
बरसत सुर सुमन, जयति श्याम जिवनि मूरी ॥७॥

पद ५७

बिलसत जुगुल रूप निधान।
कोटि काम, दिनेस सुत,ससि—लजत नै नैनान ॥१॥
जटित नाना रतन सुन्दर—कनक आसन राज।
अमित दामिनि दमकि दमकत—उभय छकि छवि छाज ॥२॥
श्री प्रिआ जू प्रान प्रीतम—प्रिआ प्रीतम प्रान।
मोहिनी मन हरनि, मोहन—हरन हिअ मुसुकान ॥३॥
जुगुल छवि गुन सील सोहन—सकुच हृदय मरोर।
परसपर लखि लखि मगन मन—रूप सिन्धु हिलोर ॥४॥
श्याम अलिजन निरखि पुनिपुनि-तन सुरति बिसराहिं।
वचन मन मति अगम सुख—सुर सीकरहि ललचाहिं ॥५॥

श्रीराम सीता युगल को मंगल कामना

पद ५८

हमारे जुगुल जुगै जुग जीवौ।
माधव मास सलोनो, माधव ! सित नवमी रस पीवौ ॥१॥हमारे०॥
मिथिला सिन्धु सुधा आनद को— सीकर लोकनि दीवौ।
करुणा, शील, रूप सुखमाकर—दीननि ओर लखीवौ ॥२॥हमारे०॥

जनक नगर नभ बाज बधैआ जड़ चेतन सुख सींवौ।
जै जै धुनि तिहुँ लोक छाइ रहि–सुर तिअ नृत्य करीवौ ॥३॥हमारे०॥
बन्दी श्याम बिमल गुन गावत – अरस परस रस लीवौ।
कल कीरति श्री पिअ प्यारी नित-जुग जुग जग चिरजीवौ ॥४॥हमारे०॥

जेठ दशहरा

पद ५६

पतित का यहि घाट प्रभु चलि आइए।
पतित पावन नाम निज निरबाहिए ॥१॥

छाँह छूते सकुचते धरमी सभी।
जिगर मल का कोष, दोष नसाइए ॥२॥

एक पथ दो काज बनते आपके।
करि अनाथ सनाथ, खूब नहाइए ॥३॥

जेठ का गंगा दशहरा आज है।
चरन सरसिज प्रेम दान दिलाइए ॥४॥

आज सा औसर न हर वासर मिले।
घाट की करि बाढ़, विरद बढ़ाइए ॥५॥

तजै ना यह जिजमान ! मन तुमको कभी।
वासना जग जात दूर भगाइए ॥६॥

नए ना, तुम हो सदा के श्याम के।
कीरती कल लोक लोकों छाइए ॥७॥

जेठ-निर्जला एकादशी

पद ६०

लीजिए जल, फल, मधुर, गहि लीजिए ।
कीजिए जग रीति, नीति पतीजिए ॥१॥

हो तुम्हीं जिजमान, भी मेहमान भी ।
समय लखि स्वीकार प्रभु सब कीजिए ॥२॥

सिन्धु करुणा से मिलै जल बूँद भर ।
दीजिए, दे दीजिए, दे दीजिए ॥३॥

लो व्यजन, दे दो मुझे, मैं ढाल दूँ ।
मृदुल तन सुकुमार श्रम कन भींजिए ॥४॥

करूँ मैं मन की, बुरी हो, या भली ।
खीजिए, हँसिए, अनखिए, रीझिए ॥५॥

धरम का दिन आज, प्रीतम ! निरजला ।
दया सा नहिं धरम और सुनीजिए ॥६॥

जला जाता है जिगर तिहुं ताप से ।
निरजला लखि, निर जला कर दीजिए ॥७॥

श्याम केवट भीलनी बनचर कुटिल ।
कीरती कल सरस नित रस पीजिए ॥८॥



श्री रथोत्सव (आषाढ़ शुक्ला द्वितीया)

पद ६१

आज सुख साज रघुराज रथ राज री ।।

दिव्य अति भव्य मणि हेम मय बिधि रचित

ज्योति जग मग जगति शुभ्र भल भ्राज री ।।१।।

ललित लघु बैस लालित सु करतल रमा

चपल हय छवि निलय छमकि छज छाज री ।

विविधि वर भूषणनि भव्य भूषित परम

निरखि नवि जात रवि बाजि बस लाज री ।।२।।

जुगुल सरकार आसीन रथ देखि छवि

सुमन सुरतरु हरसि बरसि सुर राज री ।

मनहुँ नभ नखत जुत मार विधि मिलि रचित

दमकि दामिनि सुघन जनन सुख काज री ।।३।।

शम्भु विधि हरि रिषय सिद्ध गंधर्व अहि

निरखि रथ-उत्सवहि जयति जय गाज री ।

अवध उपवन सुमन बाटिका बाग बर

जात मुसकात रघुवंश सिर ताज री ।।४।।

अवध सरजू हुलसि हुलसि हिअ रस भरैं

लोक सुख सिमिटि सब आइ इत आज री ।

मोद शशि देत फल नैन सज्जन चकोर

मुदित आए महल बाजने बाज री ।।५।।

पावस हिंडोला श्री अवधविहार

पद ६२

सोरठा-सरि सरयू के तीर-अवधपुरी निरवधि अवधि।
नृपति मुकुट मनि धीर-श्री रघुवीर बिराजहीं ॥१॥
सत, चित, सुख, रस रास-रमत सदा महि रज मगन।
नित नव युगुल बिलास-अग जग सब जहँ प्रेम-मय ॥२॥

छन्द— जहँ प्रेम मय चर अचर तहँ की गाथ किमि कहि गाइए।
विधि, हर सुरप, लोकप-सुलखि सुख भाग भूरि सिहाइए।
पुरजन सुप्रीतम प्रेम पन जल मीन कल पल ना टरैं।
सुरराज दुरलभ भोग भोगहिं तदपि विषय न मन हरैं ॥१॥

सोरठा-सुखमा, सुख तिहुँ लोक-सिमिटि सकल छाए अवध।
दुरे दुरित भय सोक-बसत, लसत आनन्द घन ॥३॥
सब बिधि पुरी रसाल-सुख शोभा मंगल मयी।
पै पावस छवि जाल-अधिक अधिक अधिकाति अति ॥४॥

छन्द—अधिकाति अति नित नित सुपावस पाइ पिअ तिअ उमगही।
हरिआलि दिसि दस लखत हिअ-हुलसात गात न सुध रही।
हीरा हरे, मखमल हरी, हरि हरि हरी महि सोहनी।
जो विश्व मोहन, मन हरन पिअ तासु हिअ की मोहनी ॥२॥

सोरठा-बीर बधूटि बिराज-बिच बिच माणिक लाल लसि।
दादुर धुनि छवि छाज-चित करषत कल रव खगन ॥५॥
चातक, केकि सु कीर-पिक पारावत नृत्य करि।
सुखदा बहति समीर-त्रिविधि ताप, भव दाप हरि ॥६॥

छन्द—शुचि त्रिविधि मन्द सुगन्ध शीतल बहति वायु सुहावनी।
त्रयताप हर भवदाप हर सुरवर अगम मन भावनी।
बक पाँति नभ घनश्याम सोहत-माल मुकतनि श्याम उर।
हरि धनु तड़ित नवग्रह प्रभा रवि, संग आए धीर धुर ॥३॥

सोरठा-मधुर गरजि घन घोर-घोरत बोरत प्रेम रस।
झरत फुहार सुथोर-मन्द मन्द सुख कन्द सखि ॥७॥
छवि शृंगार सु जोरि-लखि लखि सखि चखि चख सुधा।
पाँइँन परति निहोरि-अनुपम सुख रस छकि रहीं ॥८॥

छन्द—अनुपम सरस सुख लहि हरसि हिअ जलज मुख अलि निरखतीं।
छवि द्वन्द हर मकरन्द रघुकुल चन्द नेह सु परखतीं।
हुलसति हिंडोलनि जुगुल झुलवति प्रेम मद मातीं अलीं।
पावति परम आनन्द पावस प्रेम सरिता बहि चलीं ॥४॥

सोरठा-सरनि कंज सरसाहि—अलिगन लहि छवि रस छकीं।
देव सुमन बरसाहिं—नभ थल परमानन्द भर ॥६॥
मोद लता रस भीन—पाइ सुतरु पिअ पद मगन।
नात नीर अरु मीन—कृपा सिन्धु पिअ निरबहै ॥१०॥

छन्द—तुम कृपा सागर जग उजागर हृदय गागरि भरि चहौं।
रघुवंश के अवतंस प्रभु समरथ सयाने का कहौं।
जग आस मान बिहाय प्रीतम आपनो करि लीजिए।
निज बान पावन-पतित पै करि ध्यान यहि बर दीजिए ॥५॥

हिंडोला

पद ६३

आयो सावन सुख सरसावन, सजनी, सजिए साज हिंडोर।
गरजत मधुर मधुर रस घोरें, मेघा-मान भरे बर जोर ॥१॥
दमकि दमकि दामिनि दुरि जाई-चोरति चित वित सखि बरिआई।
प्रीतम मेघा मांझ समाई, निरखत उघटत हिए हिलोर ॥२॥
चितए जुगुल चोर-चित आवत-विहँसत मोद नेह बरसावत।
लखि लखि अलिजन मन उमगावत, गावत कजरी गौड़ हिंडोर ॥३॥
पिअ सखिअन रुख लखि मुसकाई, सैननि सैननि प्रिआ जनाई।
अनुपम छवि मय रच्यो हिंडोरा-मानों मदन मथन सुफंसोर ॥४॥
फटिक भीति चहुँदिशि अति सोहनि-मंजुल मणि मय पौरि सुमोहनि।
रुचिर काँच गच हिअ की पोहनि-नाचत बलि अलिगन मनमोर ॥५॥
चिन्तामणि सुबरन वर बिद्रुम सकल अलौकिक रचना कहि किम।
लखि बिधि अति अचरज हिअ हारें वारें निज तन मन रस बोर ॥६॥
रचना अनुपम किमि कह कोई ? प्रीतम प्रिआ आपु रच जोई।
मोहन साज सबहि मोहन के, मोहन अग जग नवलकिशोर ॥७॥
झूलत जुगुल दिए गलबाहीं, झुलवत अलि जन तन पुलकाहीं।
श्याम पीत पट अति फहराहीं, बरसत मेघा घोर न थोर ॥८॥
तीन लोक दस चारि भुवन की-आइ ललकि छवि रुचि दरसन की।
मोदलता पूरहु निजपन की, मनकी जानत सबै सजोर ॥९॥

सावन तीज हिंडोला

पद ६४

चलौ सखि तिजिआं आजु मनावैं।
सावन मास सुहावन भावन, श्री प्यारिए झुलावैं ॥१॥ चलौ०॥
सजि नवसात सुरँगपट भूषण-पुलकि हिए हुलसावैं।
हँसि हँसि करति जुहार प्रेम बस स्वामिनि पद सिर नावैं ॥२। चलौ०॥
फटिक भीति मरकत अँगनैआ-विद्रुम खम्भ सुहावैं।
कुलिश कपाट सुचारु चँदोवा-लखि रति काम लजावैं ॥३॥चलौ०॥
अनुपम छवि सरजू तट बिलसत, रुचिर हिंडोर सुभावैं।
रचना देखि विरचि चकितचित-बार बार सिरनावैं ॥४। चलौ०॥
झूलति प्रिआ, झुलावति अलिजन-मधुर गान धुनि छावैं।
तिहि अवसर इक सखी सांवरी-औचट लखि सब धावैं ॥५॥चलौ०॥
कर गहि प्रेम पुलकि तन अलिजन-श्री स्वामिनि पहँ लावैं।
मृदु मुसकाइ लाइ हिअ बूझति-नाउँ गाउँ चित चावैं ॥६॥चलौ०॥
नीची नार डारि नव नागरि-झुकि महि सीस नवावैं।
स्वामिनि नेह नगरिआ बासिनि-श्री सहचरि सब गावैं ॥७॥चलौ०॥
सुनि भरि प्रेम प्रमोद लाड़िली-नेह नीर बरसावैं।
पुलकि पकरि मृदु कर कर कमलनि झुलवैं ताहि सिहावैं। ८॥चलौ०॥
सावन तीज जनाइ स्वामिनी-प्रीतम नाम कहावैं।
मुख सों लेति न नवल नागरी-श्रीपद लखि लौ लावैं। ९॥चलौ०॥
अलिजन केलि विनोद मोद रस-मगन न कछु कहि आवैं।
प्रीतम छदम लखो इक आली-जै जै धुनि उघटावैं ॥१०॥चलौ०॥
खूब खूब कल कीरति गावति-नागर नागरि ध्यावैं।
सखि सब सदा मगन यह रस महँ-जोगी जोग न पावैं ॥११॥चलौ०॥

पद ६५

आजु सखि कंचन दिवस सुहायो ।
सावन सुख सरसावन तिजिआँ-गिन गिन दिन, दिन आयो ।।१।।
रिम झिम रिमझिम मेघा बरसत-मधुर मधुर गरजत मन करसत ।
दमकि दमकि दामिनि तरसावति-स्वामिनि बोलि पठायो ।।२।।
चलौ, चलैं झूलैं झूलन सखि-श्रीजू को सनेह रस चख चखि ।
करुणा मई स्वामिनी सजनी-निरखि करहिं मन भायो ।।३।।
गवनी मोद भरीं छवि छाजैं-सुरंग चीर पट भूषण राजैं ।
सजि नवसप्त सिंगार सु अलिजन-सिअजू पद सिर नायो ।।४।।
आदर दान दीन बहुलेरो-प्रेम प्रमोद विनोद बड़ेरो ।
चिन्तामनिन, कामतरु सुमनन-रच्यो हिंडोर लुभायो ।।५।।
मदन रवनि लखि अवनि बिलोकी सकुचि गिरा गवरी हिअ रोकी ।
रमा मगन सुध देह बिसारी-लखि बिधि हर सिर नायो ।।६।।
फटिक भीति सुठि चारु बिताना-मदन विजय मणि खम्भ सु नाना ।
हेम कपाट कुलिश बिच राजत-लाजत मदन सवायो ।।७।।
सरनि सरोज मधुप मड़रावैं-हुलसि हुलसि गुंजत छवि छावैं ।
मगन पिअत मकरन्द सुखाकर-शुचि पराग तन छायो ।।८।।
झूलति झुलवति एक एक करि-मचत बिनोद प्रमोद प्रेम भरि ।
उघटत लजति नाउँ निज पिअ को-हँसि हँसि माथ नवायो ।।९।।
स्वामिनि सबसों कहि उचरावति-हिअ सों प्रगट करावति भावति ।
आपु न मुख सों लेत सकुच बस-सैनहिं सैन जनायो ।।१०।।

लखि लखि कृपा परखि प्रिअ छोहा-प्रगटे आप हँसत सब जोहा।
स्वामिनि सहित सुअलिजन धाईं-चरन लपटि सुख पायो ॥११॥
प्रीतम प्रिआ दिए गलबैंआ-झुलवति अलि तन मन बलिगैंआ।
मोदलता कल केलि निरखि नित—उर गृह रहि सुख छायो ॥१२॥

वर्षा

पद ६६

आयो आयो री सावनवा—साजे बिधि सब बिधि सुख साज ॥
घुमड़ घुमड़ मेघा घिरि आए—गरजि गरजि हिअरा लहराए।
दम दम दमकि रही दामिनिआँ चहुँ दिसि सखि छवि छाज ॥१॥
बोलत मधुर मधुर मन हरवा-निरतत सुक चातक पिक मुरवा।
बरसत मन्द मन्द घन हरसत—पायो अग जग राज ॥२॥
सरजू पुलिन कुंज तर ठाढ़े-जुगुल प्रमोद प्रेम रस बाढ़े।
हँसि हँसि हेरि हेरि सैननि दोउ—बोलत सखिन समाज ॥३॥
रमा गिरा गिरि सुता सची बलि-चलि आईं हुलसति हिअ, मिलिअलि।
रच्यो हिंडोल अनुप अति सोहन-लखि छवि रति अति लाज ॥४॥
कनक मनिन मय रचना राजैं-मन्द मन्द हँसि जुगुल बिराजैं।
अलिजन पुलकि झुलावति सोहैं-श्याम केलि कल आज ॥५॥

पद ६७

आज हाँहि भींजत जुगुल किशोर।
उत घन, इत घनश्याम हठीले—दोउ नहीं सखि थोर ॥१॥
घुमड़ घुमड़ बरसत उत घनवा—दामिनि दुति चहुँ ओर।
इत पिअ उमँगि उमँगि सुख सरसत—प्यारी संग किलोर ॥२॥

उत घोरनि, रस बोरनि बतिआँ—इत अलिजन, उत मोर।
उत चातक पिअ रटत स्वाँति हित-इत सहचरि गन सोर ॥३॥
उत सरिता सर बाढ़त दिन दिन—इत हिअ नवल हिलोर।
चहुँ दिसि हरिआली उत सोहनि—इत मोहनि बर जोर ॥४॥
उत गृह रसत, दरकि दीवारनि—इत छवि रस झकझोर।
उतहि बयारि बहति उर कम्पत—इतहि प्रेम मति भोर ॥५॥
सरजू पुलिन कुंज तर सजनी ! जुगुल रहस रस घोर।
मोद लता सींचति हँसि हँसि पिअ—चितइ श्याम दृग कोर ॥६॥

श्री जी झूलन

पद ६८

लहरिआ लोनी लहरि लखाइ।
रूप जलधि छवि सुधा सरस जल—सुखमा भँवर सुहाइ ॥१॥
प्रीतम मन मज्जहि निसि बासर—मगन थाह ना पाइ।
हँसनि तरंग उमंग अंग भरि—नयन मीन सुखदाइ ॥२॥
झूलति प्रिआ झमकि झुकि झूमति—पिअ प्यारो पुलकाइ।
अलि जन मोद विनोद प्रेम बस—झुलवति गुन गन गाइ ॥३॥
उत सरजू सरसत इत प्यारी—रस शृंगार सजाइ।
कीरति कलित श्याम सुर रवनी—गावति अति हुलसाइ ॥४॥



झूलन (वर्षा प्रसंग)

पद ६६

झूलत लाल, लाड़िली झुलवति—दोउन पै दोऊ बलिहारी।
श्याम घटा दामिनि दमकति दुरि- इत घनश्याम छटा छवि न्यारी ॥१॥
बरसत मन्द मन्द उत, सजनी ! मधुर हँसनि-सरसत इत प्यारी।
उत घोरनि चोरनि चित, इत, सखि ! रस बोरन मृदु बोल सुधा री ॥२॥
फहर फहर फहरात पीत पट—पुनि पुनि करन सरोज सँभारी।
बनत न प्रिआ सँवारि सु साजति—अलि गन निरखि हँसति दै तारी ॥३॥
कोटि कोटि दामिनि लखि लाजत—प्रगटत दुरत अपनपौ वारी।
सुर ब्रह्मादि केकि पिक तनु धरि—नटत, रटत गुन ग्राम सुखारी ॥४॥
मुतिअन हार उड़त बक पाँती—मघवा धनु भूषन बहु धारी।
प्रीति सरित बाढ़ति अघ तट तरु—नसत समूल पतित गति कारी ॥५॥
सरजू तीर सुहावनि अवनी—हरित मनिन रँति सुकर सम्हारी।
बिधि-बिधान बिधि रच्यो हिंडोलना-रवि दामिनि शशि लखि हिअहारी।६
प्रेम प्रमोद बिनोद सुमंगल-प्रीतम प्रिआ केलि सुख सारी।
श्याम निगम बरनत नित नित कहि-नेति नेति कल कीरति प्यारी ॥७॥

पद ७०

झूलति लाड़िली, लाल झुलावैं।
बन प्रमोद सरजू तट सोहन-मोहन, मोहिनी मंत्र जगावैं ॥१॥
गहि डाँड़ी कर कमलन झुलवत— भुज बिशाल झोंकि झूँक बढ़ावैं।
बिलग होत-लखि दूर सु प्रीतम— प्यारी जू अति हिअ हहरावैं ॥२॥

आइ समीप पकरि कर सों कर—झिझकि प्रानपति कंठ लगावैं।
प्रेम प्रमोद विनोद निरखि अलि—हँसि हँसि सब स्वामिनि समुझावैं ॥३॥
पाइ प्रिआ संकेत सु अलिजन—जुगुल चरन पर बलि बलि जावैं।
मृदु मुसकाइ दोउन मनि पटिरिन—सुख आसन आसीन करावैं ॥४॥
मचत सुरंग संग पिअ प्यारी—झुलवति सखि अति सुख सरसावैं।
लै लै नाम गाइ गुन ग्रामहिं—मन चीते इनाम सब पावैं ॥५॥
मोदलता रस सरसत, बरसत—मन्द मन्द घन घुरि घहरावैं।
श्याम काम तरु छाँह सु अलिगन—कलित ललित कीरति गुन गावैं ॥६॥

जुगुल झूलन

पद ७१

झूलत लाल-लाड़िली सोहैं—अरस परस लखि लखि मन मोहैं।
श्री सरजू तट सरस सुहावन—वन प्रमोद अति हिअ हुलसावन।
केलि कुंज कल रचो हिंडोरा—चितवत चख मति चित वित चोरा।
अलिजन हरसि झुलावति दोउन-बड़ भागिनि तिन सम जग कोउ न।
वरसि सुमन सुर सुखमा जोहैं—झूलत लाल लाड़िली सोहैं ॥१॥
तीन लोक दस चार भुवन की—आई छवि आरति दरसन की।
लखि रति काम बिसरि सुध तन की—सरनाई प्रमोद कानन की।
बिधि हरि हर धरि खग मृग रूपं—निरतत लखत उछाह अनूपं।
परमानन्द ताग मन पोहैं—झूलत लाल लाड़िली सोहैं ॥२॥
रागमलार, सुहो, सोरठ धुनि—सुर बधूटि अलिगन बनि बनि भनि।
रवि दामिनि शशि अनल लजाने—दुति प्रकाश अनुपम उर आने।

झरत मेघ वर सुधा सु वारी–त्रिविधि बयारि बहति सुखकारी।
गरजत मधुर जलद बरसौहैं–झूलत लाल लाड़िली सोहैं ॥३॥
पिअ-प्यारी हँसि हँसि मुख मोरें–लखि लखि सखि पुनि पुनि तृन तोरें।
मृदु मुसकाइ चितै अति प्रीती–अलिजन भाग भई मन चीती।
जुगुल चरन पंकज उर राखे–अलि हुइ अलि समोद रस चाखे।
श्याम खूब कीरति सरसौहैं–झूलत लाल लालिड़ी सोहैं।४॥

पद ७२

झुमकि, झुकि झूलत जुगुल किसोर।
उरझो नील पीत पट फहरत –दामिनि-जलद किलोर ॥१॥
प्रेम प्रमोद विनोद विवस दोउ—चितै कृपा–दृग कोर।
लखि लखि सखि सुख उमँगि उमँगि चख-झरत सुधा रस बोर ॥२॥
अरस-परस बोलनि मृदु घोरनि–श्रवन सुखद चित चोर।
सुर सुरतिअ गन गावत निरतत-धरि वपु सुक पिक मोर ॥३॥
नेह घटा चहुँ दिसि घिरि आई–जै धुनि चातक सोर।
पर परात प्रिअ–प्रीति पनारे–सुखमा सुख नहिं थोर ॥४॥
गज मुकतनि कल माल विविधि मनि–भूषन मदन फँसोरि।
लसत मनहुँ बक पाँति इन्द्र धनु–बिहरत मन बरजोरि ॥५॥
लहरति सरि अनुराग बढ़ति अति—हिअ बिचि उठति हिलोर।
हेरनि हँसनि सुधा रस बोरनि–हरनि जरनि जिअ जोर ॥६॥
सुखमा, सखि ! दस चार भुवन मिलि–आइ बसी यहि ठौर।
पावस जस गावत पिअ पावत—श्याम गही कल पौर ॥७॥

श्री तुलसी जयन्ती-भूमिका (श्री प्रेरणा)

पद ७३

प्रभु का श्री बाल्मीकि जी प्रति आदेश

रोला छन्द—जनक,[१] जनक[२] ते अधिक पूज्य वन्दित मुनिराजा।
पालहु मम आदेस जाइ, कलि अधमन काजा।
रचे कोटि सत चरित, जीव हित, हमहिं सुहाए।
पै कलि कुटिल कुजीव अजहुँ अध बिच लटकाए।
अब तुलसी हुइ लसहु पतित पावन गहि बाना।
मानस रचि जन पीर हरहु तुम परम सुजाना ॥१॥
दोहा—जे यहि मानस आइ के, मज्जहिं पान कराहिं।
ते बिनु श्रम मोहिं पाइहैं, तेइ मम प्रीतम आहिं ॥१॥

श्री तुलसी जयन्ती (श्रावण शुक्ला सप्तमी)

पद ७४

आज सुदिन शुभ घड़ी सुहाई।
श्रावण सित सातैं मंगल निधि-अग जग सुख सरसाई ॥१॥
विधि सब बिधि भयो सानुकूल, भव-सिन्धु जहाज पठाई।
करुणाकर कवि आदि प्रगट भए-तुलसी जन सुखदाई ॥२॥
चारौ वेद पुराण अष्टदश-आगम सार जनाई।
गागर महँ सागर भरि दीनें-सब कहँ पान कराई ॥३॥

---

[१]जनक=पिता　　[२]जनक=श्री जनक जी

क्रूर कुटिल खल पांवर जीवन–जम जेहि आस लगाई।
पवि पंजर श्री मानस राखे–जम भट दल विचलाई ॥४॥
कर मींजत रद पीसत लखि कलि अबस, न कछु बस आई।
बगरी तीन लोक कल कीरति–तुलसी की ठकुराई ॥५॥
श्री राघव मिथिलेस लली के–पूजक पूज्य गुसाईं।
बाल केलि सुख लवकुश मिसि प्रभु–दीन, दयालु सुसाईं ॥६॥
को कहि पार पाव तुलसी की–महिमा श्याम बड़ाई।
प्रीतम प्रिआ चरण रज जांचत–पावन प्रेम अघाई ॥७॥

पद ७५

नमो श्री तुलसी पद–जलजात।
भव–सागर–बोहित–मानस रचि–सब कँहँ पार लगात ॥१॥
साधन–हीन, दीन, पातक–रत—कबहुँ न भजन सुहात।
एसेउ क्रूर कुटिल कपटिन कँहँ–पल मँहँ प्रभुहि मिलात ॥२॥
करुणाकर सुजान रघुबर के—प्रतिनिधि जग विख्यात।
प्रगट भए तुलसी, अघ भंजन–प्रभु की बान निभात ॥३॥
काल, करम, गुन, गुनि मानस गुन–सकुचत हृदय पलात।
श्याम भरोस भूरि भारी उर–जम ते नाहिं डरात ॥४॥



रच्छा बन्धन (सलूनों)

पद ७६

सुख सानी सलूनों सलोनी री।
चलो सखी रखिआ हम बाँधहिं—बैठी क्यों बनि मौनी री ॥१॥
सुन्दर श्याम सलोने ठाकुर—काहे होत लजौनी री।
नीचन को आदर अति, सजनी ! कीरति कल प्रगटौनी री ॥२॥
विरद पतित पावन पिअ धारे—मो हिअ मांझ धरौनी री।
सुनि लजाइ हँसि चली सखिन मिलि—उर अति प्रेम भरौनी री ॥३॥
लाग ललित दरबार दूर ते—लखि पिअ ललित लखौनी री।
लीन बोलि, सनमानि बँधाई—रखिआ, राखि रखौनी री ॥४॥
श्याम राम की बान सनातन—दुखिअनि दुखनि हरौनी री।
परम कृपालु प्रनत प्रति पालक—रंकनि राव करौनी री ॥५॥

पद ७७

सखि आजु सलूनों सलोनी सी। सखि—आजु सखि आजु-सखि आजु सलूनों सलोनी सी ॥ सखि आजु०॥
दिन दिन दून दून सुख बाढ़ै बिलसहि नव छवि छोनी सी ॥१॥
अरस परस दूनौं रस बरसैं पीवहिं हम दृग दोनी सी।
मज्जहिं नीर जिआ कल लहि—प्रीति बीज हिअ बोनी सी ॥२॥
उनहिं अगम नहिं, सुगम करहिं सखि-अनहोनी हू होनी सी।
यहि बिधि कहत सुनत सब आईं—पिअ ढिग गज गति गोनी सी ॥३॥
जुगुल बधावनि देत प्रेम बस—हँसि हँसि अलिजन लोनी सी।
श्याम मोद भरि पिअ सु बँधावत—रखिआ, लखि चख कोनी सी ॥४॥

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

पद ७८

प्रगटे रवि कुल दिनेस—यदु कुल शशि मनिआं ।।
उतहि दिवस, इतहि रैन—आरत हित, कृपा ऐन ।
दोउन बिच आइ आपु—करुणा जल सिंचनिआं ।।१।। प्रगटे०।।
भाद्र मध्य असित पच्छ—जोग लगन सबहि स्वच्छ ।
उदय भए दीन बन्धु- दीन दुख दहनिआं ।।२।।प्रगटे०।।
सजग सन्त सुख समान—मोहे खल सुध हिरान ।
छूटे भव बन्धु साधु—असुर सीस धुनिआं ।।३।।प्रगटे०।।
बन्दी गृह अति प्रकास—कोटि भानु ससि निवास ।
अद्भुत ससि उयो आज—तिहूँ ताप हनिआं ।।४।।प्रगटे०।।
भूषण पट दिव्य, भव्य—अनुपम अतुलित सुछव्य ।
रागे पितु मातु निरखि—परम प्रेमसनिआं ।।५।।प्रगटे०।।
लोचन नव नीर जात—तरुण अरुण सुख सजात ।
मृदुल श्याम मेघ गात—दम दम दमकनिआं ।।६।।प्रगटे०।।
सुखमा को सिन्धु सरस—उमगत अति हरस, हरस ।
प्रगट निरखि पूरन ससि—लहरत लहरनिआं ।।७।।प्रगटे०।।
चितवनि मृदु हँसनि चारु—लेत मोल मन विचारु ।
कैरव जन बिकसि बिकसि बकसत तेन मनिआं ।।८।।प्रगटे०।।
अलिजन सर बस सु पाइ—प्रेम मोद सों अघाइ ।
चितवत चित लाइ, चाइ—जनु चकोर जानिआं ।।९।।प्रगटे०।।
जननी सुख सुधा सींच—शिशु हुइ कीने सनाथ ।
उनए बृजचन्द श्याम—आनँद बर सनिआं ।।१०।।प्रगटे०।।

पद ७९

रघुबर जदुबर आज भए री।
उत दिनमनि दै मान दिपति अति-इत निसि ससि उर लाइ लए री ॥१॥
उत बन्दीजन सुजस बखानत-इत बन्दी गृह सुख सजए री।
उत रवि अछत लसत आनंद घन-इत घनश्याम प्रगट उनए री ॥२॥
उत श्री अवध लसत श्री सरजू-इत रवि जा मधुपुर बसए री।
उत कपि भालु कृपालु सखा कल गोपि ग्वाल सँग इत रमए री ॥३॥
ललित लखन सेवित उत प्रीतम-इत बलि, बल सेवत प्रभु ए री।
श्याम राम जन पन प्रति पालक-प्रनत पाल लीला धर ऐ री ॥४॥

श्री राधाष्टमी

पद ८०

आज जनक तनया प्रगटानी-श्री कीरति वृषभानु सदनिआँ।
जासु अंस उपजत अगिनित नित-उमा, रमा शारद, सुख सनिआँ ॥१॥
अति उदार करुणामय प्रीतम-प्रीति परखि प्रगटीं महरनिआँ।
लीला ललित केलि बिस्तारन-बरसाने बरसान रसनिआँ ॥२॥
सुचि सहचरि समाज सँग सोहत-मिथिला, ग्राम बधू रस खनिआँ।
श्री स्वामिनि रुख जुगवति सन्तत-सब प्रीतम हिअ हर हुलसनिआँ ॥३॥
सखा ग्वाल अलि गन गोपी जन-करन केलि कल पिअ मोहनिआँ।
श्याम राम की प्रिआ सिआ धरि-राधा रूप रमाइ रमनिआँ ॥४॥



श्री अनन्त चतुर्दशी

पद ८१

जय महिधर जय जयति अनन्ता।

महिमा नाम रूप गुन गाथा-नेति नेति नित निगम भनन्ता ।।१।।

जीवन धन सिअ राम लाड़ले-लसत सदा हिअ श्री, श्रीकन्ता।

जुगुल चरन पंकज सुनीर मन-मीन मगन निसि दिवस वसन्ता ।।२।।

जलज नयन सुख अयन गौर वपु-लखि छवि बलि रति नाथ लजन्ता।

सीताराम भगति भंडारी-अति उदार कोमल हितवन्ता ।।३।।

औढर दानि द्रवत कर जोरे-कलमल रत असंत किए सन्ता।

श्याम राम सिअ आन मिलावहु-कल कीरति वर बान लसन्ता ।।४।।

शरद पूर्णिमा

पद ८२

आज शरद रस रास सुहावनि-मन मोहन मन सोहनि प्यारी।

राका शशि बर बदन सुभग सुठि-सुखद चन्द्रिका छवि उजियारी ।।१।।

बिधु कर निकर लजावनि भावनि मृदु मुसकानि सरस सुखमा री।

अलिजन चारु चकोरि चहूँ दिसि-परमानन्द लहति नित भारी ।।२।।

प्रीतम प्रिआ केलि कल कौतुक-कलित कला कवि कहै कहा री।

शेष महेश गनेश शारदा-हारि मानि मन मौन गहा री ।।३।।

श्याम कुमुद जन तेहि रस छाके-थाके निरखि जुगुल करुणा री।

खूब खूब कल अमिअ सु कीरति-पान करत तन मन सुधि टारी ।।४।।



दिवाली

सखि प्रति सखि

पद ८३

चलौ री अपनेहु भाग भरावैं।
सरजू तीर कदम की छैआँ—पिअ प्यारी सुख पावैं ॥१॥
सिंहासन सुठि सुन्दर, सजनी ! रतन जटित मन भावैं।
दम्पति दिपत हँसत, इत हेरत—सैननि हमहिं बुलावैं ॥२॥
भरि रस मोद अलीं उठि धाईं—पिअ प्यारी उठि आवैं।
अति आदर आगे करि लावत—हँसि हँसि कंठ लगावैं ॥३॥
चौसर तास गंजिफा रचि रचि—धरि सन्मुख हुलसावैं।
हिल मिल दोउ खेलत उमंग भरि—अलिजन मोद बढ़ावैं ॥४॥
हारे पिअ बलिहार प्रिआ कहँ—सुमन हार पहिरावैं।
दूजी बार बिजय प्रीतम की—लखि सखि हिअ सकुचावैं ॥५॥
प्रिआ सहित सब पग परि पिअ के—नैना नीचे नावैं।
मनि भूषण बराइ पद रज भय—सबहिंनि सजग करावैं ॥६॥
तीजी बार प्रिआ जू विजयीं—प्रीतम प्रगट लजावैं।
श्याम प्रमोद मनहिं मन छायो—कल कीरति सब गावैं ॥७॥

पद ८४

आज दोउ बदि बदि पाँसे ढारें ॥आज०॥
श्री जी—हम हारें तो पाँउँ पलोटैं—ए तन तुम पं वारें।
जीतैं तो उर भवन बसावहिं—मूँदैं नैन किवारें ॥१॥

श्री प्रभु-हारैं तो पद कमल निहारैं—विजय हार गर डारैं।
जीतैं तो मुख जलज मधुप बनि—मधुर मधुर गुंजारैं ॥२॥
हारेहु जीत दोऊ दोउन की—बदत प्रमोद पसारैं।
हरि हारे पावत प्रिअ सदनहिं-प्रिआ हारि लहि प्यारैं ॥३॥
श्यामा श्याम केलि कल अलि गन-तन मन सुरति बिसारैं।
नित नित नव मंगल विनोद सुख-दीप मालिका सारैं ॥४॥

श्री सीताराम विवाह पंचमी (मार्गशीर्ष शुक्ला ५)

पद ८५

धन्य मास मगसिर सित पाँचैं। सचर अचर मुद मय सब नाचैं॥
प्रान प्रिआ-प्रभु लहि यहि मासहिं-ताते दीन रूप निज ता कहिं॥
श्री मुख गीता प्रगट बखानो। मार्गशीर्ष मम रूपहि जानो॥
तीन लोक दस चारि भुवन महँ। रचो महा उत्सव सुख सब कहँ॥
जनक नगर छवि कहि न सिराई। शारद कोटि कहत सकुचाई॥
जो संपति नीचन गृह छाजै। ताहि निरखि धनपति अति लाजै॥
सब विदेह तन सुध बिसराई। बिधि हरि हर लखि लखि बलि जाई॥
सुखमा सुख तिहुँ लोकन केरो। सिमिटि जनकपुर कीन बसेरो॥
श्याम दुलह दुलहिन सिर नावै। कृपा कटाच्छ नेकु प्रभु पावै॥

बसन्त पंचमी

पद ८६

आजु बसन्त लसन्त चराचर—सन्त जनन घर बजत बधाई।
सरजू अवध विलोकि मोद भर रहि पुर बसि निज सुध बिसराई ॥१॥
दिपत दमकि दरबार बसन्ती—कंचन मनिमय भीति सुहाई।
बर बितान दर खंभ बसन्ती—झालर मुकतन की छवि छाई ॥२॥

सिंहासन रवि कोटि दामिनी – लखि लजि बार बार बलिजाई ।
बिधि अति चकित थकित निरखत छवि-निजकरनी कछु कतहुँ न पाई॥३॥
साजे साज समाज बसन्ती—बिलसत हिअ हुलसत रघुराई ।
वाम भाग राजत श्री स्वामिनि—सेवत जन चहुँ दिसि सुख पाई ॥४॥
छत्र चँवर वर विजन बसन्ती—नाना साज सरस सुखदाई ।
हँसि हेरत नतपाल उभय जनु—देत अभय वर दान बुलाई ॥५॥
सो सुखमा सुख शेष शम्भु शुक—शारद चह कह कहि न सिराई ।
नख सिख अंग अंग भूषण पट—साज बसन्ती चितै चुराई ॥६॥
सुर गन नभ झर सुमन बसन्ती—राग बसन्त अपसरा गाई ।
जल थल ब्योम वायु सुख आकर—सकल बसन्ती सुख सरसाई ॥७॥
कृपासिन्धु सरकार जुगुल जस—कस रसना बरनैं प्रभुताई ।
भल औसर तकि श्याम सु जाचत—राखहु नाथ ! चरन सरनाई ॥८॥

होरी

पद ८७

आजु हरि खेलत होरी—नमत लखि मदन करोरी ॥आजु०॥
कर कजन कंचन पिचकारी—प्रेम सुरंग भरो री ।
घन दामिनि लै जनु दुलरावत—हलरावत सुख बोरो ॥
हहरि हिअ हार हरोरी ॥१॥आजु हरि०॥
तकि तकि मार, मार लजवत अति—मोहनि मार मरोरी ।
अबलन पै बलि बल दरसावत-कहि आवत यह को ? री ! ॥
हँसत पुनि पुनि मुख मोरी ॥२॥आजु हरि०॥
नेह गुलाल मलत ना मानत—ठानत रारि न थोरी ! ।
रँग भीनों छीनो मन हमरो—कीनों बस बर जोरी ॥
दई सखि ! डारि ठगोरी ॥३॥आजु हरि०॥
ऐंच खैंच बहु पेंच करत है—नाच नचावत सो, री ! ।
कहा करौं ? गोरी ! यहि अचरज—कौन मोरि मति भोरी ॥
भले जग लोग हँसो री ॥४॥आजु हरि०॥

नख सिख रूप छटा छवि छाकी—निज पर मोंहि बिसरो री।
अवध कुमार बड़ो रसिआ, सखि ! हारि परी वासों री॥
नहीं उपचार चलो री ॥५॥आजु हरि०॥
बाँह गहे की लाज निबहिए—श्याम बहोर बहोरी।
खूब खूब कल कीरति प्रीतम—छाइ रही चहुँ ओरी॥
सदा उर माँहि बसोरी ॥६॥आजु हरि०॥

सखि प्रति सखि का मन्तव्य

पद ८८

आजु पिअ गए इतराई—कसर सब लेहु कढ़ाई ॥आजु०॥
करि करि नित्य भामिनिन भोरी—मोहनि तंत्र चलाई।
अब स्वामिनि सँग चलौ, बेग, सखि ! उन पर करहु चढ़ाई॥
लाल कँहँ देंहि छकाई ॥१॥आजु०॥
अस दृढ़ मंत्र आनि अलिजन उर—होरी साज सजाई।
भरि सुरंग कंचन पिचकारिन—बहु गुलाल समुदाई॥
सखिन सजि सेन चलाई ॥२॥आजु०।
उत रघुबर निज सखन बन्धु सह—लखि पुनि पुनि हरषाई।
सबहि सजग करि श्री रघुनन्दन—रंग भूमि रहे छाई॥
प्रिआ जू लखि मुसकाई ॥३॥आजु०॥
कानन लागि लागि इक सखि कछु—कहत मंत्र प्रभुताई।
पिअ को नाँउं राम सह सिअ कहि—अलिगन सनमुख धाईं॥
पकरि गए रघुकुल राई ॥४॥आजु०॥
बर बस गहि अवधेस लाड़िले—ऍंच खैंच सखि लाईं।
जाइ कीन स्वामिनि ढिग ठाढ़े—नैना नीचे नाई॥
सकुच गृह मनहुँ समाई ॥५॥आजु०॥
नख सिख सजि सिंगार सु तिअ के—पट भूषण छवि छाई।
डारि दीन मोहनि मन मोहन—अलिजन बलि बलि जाईं।
कौतुकी कला लखाई ॥६॥आजु०॥

सखिअन पिअ लखि परत स्वामिनी-स्वामिनि पिअ दरसाई।
छाँड़ि कमल कर प्रीतम के सब-गहि स्वामिनि हुलसाई॥
हँसत करताल बजाई॥७॥आजु०॥
मोरि मोरि मुख हँसत जुगुल अति कौतुक केलि लुभाई।
अरस परस मोहित लखि छबि पर—मोद विनोद सवाई॥
श्याम कल कीरति गाई॥८॥आजु०॥

गरीब-निवाजी

पद ८६

ऐसी हरि खेलत होरी।
आरत अधम अनाथ आलसिन उर लावत बर जोरी।
कर कंजन भरि रति पिचकारी- प्रेम रंग रस बोरी॥
हँसत श्री जनक किशोरी॥१॥ऐसी०॥
गहि अनुराग गुलाल लाल कर—धाइ धाइ चहुँ ओरी।
मलत बदन हठि हेरि हेरि सखि—तारी देत खरो री॥
गनिन सों ले मुख मोरी॥२॥ऐसी०॥
गरब गरूर गुमान न भावत—दीन सु हिए बसोरी।
दिन दुखिअन दुख दरत दोऊ ए—जुगुल दयाकर जोरी॥
फाग मिसि लैं मन छोरी॥३॥ऐसी०॥
सुन्दर श्याम गौर घन दामिनि—जो उपमा सो थोरी।
खूब खूब जग कीरति जागति अस होरी नित हो, री॥
मोद रस अमित बढ़ो री॥४॥ऐसी०॥

॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥



हृदयोद्‌गार

चलो मन श्री सरयू के तीर ।

जिनके तीर पर बसत अयोध्या, राजा श्री रघुवीर ॥१॥

जहँ मज्जन को आवें सुरगन, साधुन की रहें भीर ।

श्री सरयू स्नान करन सों, मिट जावें भव पीर ॥२॥

राघव अनुज सखा सब बिहरें धरे धनुष और तीर ।

नाना खेल—रचें सब मिल कें, पुलकित होय शरीर ॥३॥

सखन मध्य श्री राम सुशोभित, चल रहीं सुखद समीर ।

बृजुआ राघव सँग खेलन को, सेवहु पावन नीर ॥४॥



हम हैं रघुबर हंसनि उपासो ।

श्री मुख कमल हँसत ही देखौं, आँख बनें भ्रमरा सो ॥१॥

दिव्य हँसन पर भक्त प्रफुल्लित, किरन खिलें चन्दा सो ।

हँसन छटा की रूप माधुरी, पियें सखा सुखरा सो ॥२॥

हमरे ठाकुर रामचन्द्र हैं, ठकुराइन सीता सो ।

बृजुआ की बीनती यही है, सदा रहो तुम पासो ॥३॥

उद्‌गारक—

पूज्यपाद श्री बाबूजी के
दुलार से दुलारित

बृजनाथ शरण

परमपूज्य श्री बाबूजी कृत

पीतम पिआ पिअरवा–प्रानों का प्रान प्यारा ।

सिअ बर सुभी सलोना–सुकुमार सार सारा ॥१॥

कोमल कलित कलाधर–कल केलि कर कन्हैआ ।

श्री जानकी सजीवन–जगदीश जग उजारा ॥२॥

रसिकेश रास रस वस–राकेश मुख सुहनिआँ ।

मनमथ मथन मनोहर–अबलों का बल सहारा ॥३॥

चित चोर चारु चितवन–मुसकान मैन मद हर ।

शुचि चन्द्र कर हँसनि वर-कल खूब नैन तारा ॥४॥

लोचन विशाल नीके–मृग मीन से कमल से ।

कजरारे सान वारे–सैनों कि मार मारा ॥५॥

कल केश श्याम कुंचित–अलिगन विराजते हैं ।

भृकुटी कुटिल कमनिआं–बर नैन बान धारा ॥६॥

शिव प्रान नाम तारक–मुख से लिआ न जाए ।

प्यारे बसौ जिगर में–मनकाम यह हमारा ॥७॥

श्री कोशलेश सर बस–कोशल सुता लड़ैते ।

घनश्याम खूब हमरे–कल नाम का अधारा ॥८॥

साहित्य प्रिंटिंग प्रेस, हाथरस ।